CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/1/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 106**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?
लहू गर्म करने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार ।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बातों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले ।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार ? [5 अंक]

1(क). कलम किस बात की प्रतीक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रतीक के माध्यम से किसी व्यापक भाव को व्यक्त किया जाता है।
- कलम का संबंध विचार, ज्ञान और जनजागरण से है।

चरण 1: पंक्ति का संकेत कवि कहता है कि कलम विचारों के जलते अंगारे पैदा करती है और उसके अक्षर चिंगारी बनते हैं। इससे स्पष्ट है कि यहाँ कलम केवल लिखने का उपकरण नहीं है।

चरण 2: प्रतीक का अर्थ कलम प्रखर विचारों, बौद्धिक शक्ति और जनचेतना की प्रतीक है। प्रभावशाली लेखन सोए हुए समाज को जाग्रत करता है। लेखन मनुष्य के भीतर साहस तथा देश की रक्षा की प्रेरणा जगाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कलम क्रांतिकारी विचारों, ज्ञान और जनजागरण की शक्ति की प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पूछे जाने पर वस्तु का शाब्दिक अर्थ नहीं, उससे व्यक्त होने वाला व्यापक भाव लिखें।

1(ख). तलवार की आवश्यकता कहाँ पड़ती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार काव्यांश की प्रत्यक्ष पंक्ति है।
- तलवार बाहरी आक्रमण और हिंसा से रक्षा का साधन है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति कवि स्पष्ट कहता है, “हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार। यहाँ हिंस्र जीव से आशय हिंसक और आक्रामक शक्तियों से है।

चरण 2: प्रसंग के अनुसार उत्तर जब कोई हिंसक शक्ति प्राणों या सुरक्षा पर आक्रमण करे, तब उससे अपनी रक्षा करने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है। विचार प्रेरणा देते हैं और तलवार प्रत्यक्ष रक्षा का साधन बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंसक जीवों अथवा आक्रामक शक्तियों से आत्मरक्षा करने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है।

त्वरित सुझाव: कहाँ की जगह पूछी गई परिस्थिति पहचानें; उत्तर को हिंसक आक्रमण से रक्षा तक सीमित रखें।

1(ग). लहू को गर्म करने से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में लहू गर्म करना एक लाक्षणिक प्रयोग है।
- इसका संबंध उत्साह, साहस और सक्रियता जगाने से है।

चरण 1: शब्दों का संदर्भ कवि लहू गर्म करने के लिए मन में ज्वलित विचार रखने को कहता है। इसलिए इस प्रयोग का आशय रक्त का तापमान बढ़ाना नहीं, मन की चेतना और शक्ति जगाना है।

चरण 2: अभिप्राय स्पष्ट करना प्रखर विचार मनुष्य की निष्क्रियता और भय दूर करके उसमें जोश, साहस तथा संघर्ष की तत्परता उत्पन्न करते हैं। इसी मानसिक उत्साह को कवि लहू गर्म होना कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष लहू गर्म करने से कवि का आशय मनुष्य में उत्साह, साहस और देशरक्षा के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा जगाने से है।

त्वरित सुझाव: लाक्षणिक प्रयोग का अर्थ आसपास की पंक्ति से निकालें; यहाँ ज्वलित विचार उत्साह की कुंजी हैं।

1(घ). कैसे व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता नहीं होती ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश मानसिक निर्भीकता और विचारों की शक्ति पर बल देता है।
- भीतर जलते शोले साहस तथा संघर्षशील चेतना के बिंब हैं।

चरण 1: काव्यांश का प्रमाण कवि ऐसे नर-नारियों का वर्णन करता है जो निर्भय हैं, जिनकी बातों में बिजली और दिमाग में गोले हैं। ये बिंब उनके तेजस्वी विचारों और दृढ़ मनोबल को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: व्यक्ति की पहचान जिस व्यक्ति में प्रखर विचार, निर्भीकता, आत्मबल और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का उत्साह हो, वह केवल बाहरी हथियार का मोहताज नहीं होता। कवि इसी आंतरिक शक्ति को महत्त्व देता है।

चरण 3: निष्कर्ष निर्भीक, दृढ़ आत्मबल वाले और प्रखर विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति को तलवार के अभाव की चिंता नहीं होती।

त्वरित सुझाव: व्यक्ति के गुण लिखते समय निर्भीकता और प्रखर विचार दोनों जोड़ें; यही अंतिम पंक्तियों का आधार है।

1(ङ). तलवार कब अपरिहार्य हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपरिहार्य का अर्थ है जिसे टाला न जा सके।
- काव्यांश हिंसक आक्रमण से रक्षा की स्थिति में तलवार की जरूरत बताता है।

चरण 1: पाठ से आधार लेना "हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार पंक्ति बताती है कि प्रत्यक्ष हिंसा का सामना केवल विचारों से नहीं किया जा सकता। यहाँ आक्रामक खतरे की स्थिति मुख्य है।

चरण 2: अपरिहार्य परिस्थिति जब हिंसक आक्रमणकारी से प्राणों और स्वतंत्रता की रक्षा करनी पड़े तथा प्रत्यक्ष प्रतिरोध आवश्यक हो जाए, तब तलवार अपरिहार्य बन जाती है। उत्तर का केंद्र आत्मरक्षा है, अनावश्यक हिंसा नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष जब हिंसक आक्रमण से प्राणों और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रत्यक्ष प्रतिरोध आवश्यक हो, तब तलवार अपरिहार्य

हो जाती है।

त्वरित सुझाव: कब के उत्तर में परिस्थिति लिखें और उसे काव्यांश की हिंस्र जीव वाली पंक्ति से जोड़ें।

2. राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परम्परा के रूप में प्राप्त होती है । जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं – हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है । ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या सम्प्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है । राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है ।

जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है । राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है – देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े । महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे । व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं ।

जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया । चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत – तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा । आज देश में अनेक प्रकार के आन्दोलन चल रहे हैं । कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है । आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है । फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है । [15 अंक]

2(क). गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक संक्षिप्त होकर पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को व्यक्त करता है।
- गद्यांश का केंद्र राष्ट्रहित, एकता और राष्ट्रीय भावना है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना लेखक राष्ट्र को सांस्कृतिक विरासत मानता है और उसके विकास के लिए काम करने को राष्ट्रीयता कहता है। वह संकीर्ण भेदभाव से ऊपर उठकर देश को प्राथमिकता देने पर बल देता है।

चरण 2: शीर्षक चुनना अंतिम अनुच्छेद में फूट, भाषागत और जातिगत भेद तथा अहंकार से राष्ट्रीय बोध में कमी की चर्चा है। इसलिए ऐसा शीर्षक उपयुक्त होगा जिसमें राष्ट्रीय भावना और देश की एकता दोनों समाहित हों।

चरण 3: निष्कर्ष उचित शीर्षक है: "राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता।

त्वरित सुझाव: पूरे गद्यांश में बार-बार आने वाले केंद्रीय विचार को चुनें; केवल एक अनुच्छेद पर शीर्षक न रखें।

2(ख). अस्तित्व एवं अनिवार्य से प्रत्यय और उपसर्ग छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने वाला अंश प्रत्यय कहलाता है।
- शब्द के आरंभ में जुड़ने वाला अंश उपसर्ग कहलाता है।

चरण 1: अस्तित्व का विश्लेषण अस्तित्व शब्द में मूल अंश अस्ति है और उसके बाद त्व जुड़ा है। इसलिए अस्तित्व में प्रत्यय "त्व है। प्रत्यय अलग करते समय मूल शब्द के अंत में जुड़े पूरे अंश को पहचानना चाहिए।

चरण 2: अनिवार्य का विश्लेषण अनिवार्य शब्द में निवार्य से पहले निषेध का बोध कराने वाला अ उपसर्ग जुड़ा है। अतः इसका विभाजन अ + निवार्य है। केवल शुरुआती ध्वनि देखकर अन् लिखने के बजाय मूल शब्द निवार्य को पहचानना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष अस्तित्व में प्रत्यय "त्व तथा अनिवार्य में उपसर्ग "अ है।

त्वरित सुझाव: अस्ति + त्व और अ + निवार्य लिखकर जाँचें; उपसर्ग निकालने के बाद मूल शब्द बचना चाहिए।

2(ग). "जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है।" रचना के आधार पर वाक्य का प्रकार लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचना के आधार पर वाक्य सरल, संयुक्त या मिश्र हो सकते हैं।
- मिश्र वाक्य में प्रधान उपवाक्य के साथ आश्रित उपवाक्य रहता है।

चरण 1: उपवाक्य पहचानना "जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है आश्रित उपवाक्य है। यह अपना अर्थ पूरा करने के लिए आगे के कथन पर निर्भर करता है।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य और प्रकार "तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है प्रधान उपवाक्य है। जब-तो का संबंध दोनों उपवाक्यों को निर्भरता के साथ जोड़ता है। इसलिए इन्हें दो स्वतंत्र उपवाक्य मानकर संयुक्त वाक्य कहना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह मिश्र वाक्य है।

त्वरित सुझाव: जब-तो संबंध देखकर प्रधान और आश्रित उपवाक्य अलग करें; निर्भरता मिश्र वाक्य की पहचान है।

2(घ). 'स्व' से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में शब्द का अर्थ उसके संदर्भ से निर्धारित होता है।
- राष्ट्रीयता की शर्त देश को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखना है।

चरण 1: स्व का संदर्भगत अर्थ यहाँ स्व से तात्पर्य व्यक्ति के निजी अहं, स्वार्थ और अपने तक सीमित संकीर्ण पहचान से है। लेखक धर्म, जाति और कुल के आधार पर व्यवहार करने से दृष्टि संकुचित होने की बात कहता है। अतः स्व का आशय केवल व्यक्ति का अस्तित्व नहीं, वह स्वार्थपूर्ण आग्रह है जो देशहित से ऊपर अपने हित को रखता है।

चरण 2: उसे मिटाने की आवश्यकता ऐसे अहं और स्वार्थ को छोड़ना आवश्यक है, क्योंकि इनके कारण समाज में भेदभाव, संघर्ष और फूट पैदा होती है। गद्यांश के अनुसार भारत की फूट का लाभ विदेशियों ने उठाया। निजी हितों को राष्ट्रहित के अधीन रखने से नागरिक पारस्परिक सीमाओं की बाधाएँ भुलाकर साथ काम कर सकते हैं। तभी राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता और विकास की रक्षा संभव होती है।

चरण 3: निष्कर्ष स्व का अर्थ निजी अहं और संकीर्ण स्वार्थ है। उसे मिटाना इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति भेदभाव से ऊपर उठकर देश को प्राथमिकता दे और राष्ट्रीय एकता व विकास में योगदान करे।

त्वरित सुझाव: स्व को आत्मविनाश न समझें; गद्यांश में उसका संबंध अहं और देशहित के आड़े आने वाले स्वार्थ से है।

2(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए – "राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के निहित अर्थ को गद्यांश से जोड़ना चाहिए।
- राष्ट्र की पहचान भूभाग के साथ साझा सांस्कृतिक जीवन से बनती है।

चरण 1: भौगोलिक सीमा से व्यापक अर्थ राष्ट्र का अर्थ केवल सीमाओं से घिरा भूमि का क्षेत्र नहीं है। वह लोगों के जीवन, स्मृतियों और परंपराओं से जुड़ा होता है। गद्यांश के अनुसार हमें पूर्वजों से जो सांस्कृतिक विरासत परंपरा के रूप में मिलती है, वह भी राष्ट्र का अभिन्न अंग है। हम उसी परिवेश में बड़े होते, शिक्षा पाते और जीवन बिताते हैं।

चरण 2: विरासत और आत्मीयता का संबंध इस साझा विरासत से लोगों में अपनापन और परस्पर स्नेह उत्पन्न होता है। धर्म, जाति या भाषा की भिन्नता के बावजूद नागरिक एक राष्ट्र से जुड़े रहते हैं। इसलिए राष्ट्र की रक्षा का आशय केवल जमीन की सुरक्षा नहीं, उसकी स्वतंत्रता, सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक जीवन की रक्षा भी है। यही भाव राष्ट्र के लिए जीने और उसके विकास में योगदान देने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्र भूभाग के साथ पूर्वजों से मिली संस्कृति, परंपराओं और साझा जीवन की विरासत भी है। यही विरासत नागरिकों में अपनापन तथा राष्ट्रीय एकता का भाव जगाती है।

त्वरित सुझाव: आशय में जमीन और संस्कृति दोनों का संबंध दिखाएँ; पूर्वजों से मिली परंपरा वाला संकेत अवश्य जोड़ें।

2(च). राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्रीयता का अर्थ गद्यांश में दी गई परिभाषा से ग्रहण करना है।
- प्रश्न के दोनों अंशों में राष्ट्रीयता का आशय और गद्यांश में उल्लिखित दो राष्ट्रभक्तों के नाम अपेक्षित हैं।

चरण 1: राष्ट्रीयता का आशय समझिए लेखक के अनुसार राष्ट्र के लिए जीना और कार्य करना तथा उसकी स्वतंत्रता एवं विकास के लिए प्रयत्नशील रहना राष्ट्रीयता है। इसमें देश को प्राथमिकता दी जाती है। धर्म, जाति, भाषा या सम्प्रदाय के भेद से ऊपर उठकर देशवासियों में स्नेह रखना इसी भावना का अंग है। आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ का त्याग करता है।

चरण 2: गद्यांश से नाम चुनिए गद्यांश में महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का उल्लेख है। इनमें से दो नाम महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस लिखे जा सकते हैं। लेखक बताता है कि राष्ट्रीयता के कारण इन राष्ट्रभक्तों ने अनेक कष्ट सहे, फिर भी अपने निश्चय पर अटल रहे। यही प्रसंग उनकी राष्ट्रनिष्ठा को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्रीयता राष्ट्र की स्वतंत्रता और विकास के लिए जीने तथा कार्य करने की भावना है। गद्यांश में उल्लिखित दो राष्ट्रभक्त महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा पहले अनुच्छेद से तथा राष्ट्रभक्तों के नाम दूसरे अनुच्छेद से चुनकर उत्तर के दोनों भाग पूरे करें।

2(छ). राष्ट्रीय बोध का अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्रीय बोध का अभाव देशहित और पारस्परिक एकता की उपेक्षा से पहचाना जाता है।
- उत्तर में अंतिम अनुच्छेद में वर्णित स्थितियों का ही उल्लेख करना है।

चरण 1: अभाव के प्रत्यक्ष रूप पहचानिए लेखक के अनुसार भाषा के आधार पर संघर्ष होना तथा धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जाना राष्ट्रीय बोध के अभाव के रूप हैं। जातिगत और भाषागत भेदभाव समाज को बाँटते हैं। ऐसी स्थितियों में देशवासी एक दूसरे को अपने राष्ट्र का समान सदस्य समझने के स्थान पर संकीर्ण पहचान के आधार पर देखते हैं।

चरण 2: इन रूपों का मूल समझिए व्यक्ति का अपने अहं में सिमट जाना भी राष्ट्रीय चेतना के अभाव को प्रकट करता है। तब उसके लिए सामूहिक देशहित की अपेक्षा अपना सीमित हित अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। गद्यांश में फूट के कारण विदेशियों को शासन का अवसर मिलने का उल्लेख इसी विभाजन के दुष्परिणाम को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्रीय बोध का अभाव जातिगत और भाषागत भेदभाव, भाषा को लेकर संघर्ष, धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों के निष्कासन तथा व्यक्ति के अपने अहं में सिमट जाने के रूप में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: अंतिम अनुच्छेद के ठोस उदाहरण लिखें और उन्हें संकीर्णता तथा देशहित की उपेक्षा से जोड़ें।

2(ज). राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है ? उदाहरण सहित लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र का उत्थान व्यक्तियों की देशहित में सक्रिय भागीदारी से जुड़ा है।
- उदाहरण उन्हीं राष्ट्रभक्तों से लेना है जिनका उल्लेख गद्यांश में हुआ है।

चरण 1: व्यक्ति की भूमिका स्पष्ट कीजिए राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसे राष्ट्र की स्वतंत्रता और विकास के लिए कार्य करना चाहिए। धर्म, जाति, भाषा और सम्प्रदाय की बाधाओं से ऊपर उठकर परस्पर स्नेह एवं सहयोग बनाए रखना उसका दायित्व है। देश को प्राथमिकता देने के लिए निजी स्वार्थ और अहं का त्याग आवश्यक है। इस प्रकार व्यक्ति की व्यापक दृष्टि राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है।

चरण 2: गद्यांश का उदाहरण जोड़िए महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस ने राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अनगिनत कष्ट उठाए, पर अपने निश्चय से विचलित नहीं हुए। उनके कार्य बताते हैं कि निष्ठावान व्यक्ति कठिनाइयों के बीच भी देश के लिए योगदान देता है। उनका त्याग व्यक्ति की राष्ट्रनिर्माण में भूमिका का गद्यांश में दिया गया उदाहरण है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति देशहित को प्राथमिकता देकर, भेदभाव मिटाकर और राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा विकास के लिए कार्य करके राष्ट्र के उत्थान में योगदान देता है। गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का कष्ट सहकर अपने निश्चय पर अटल रहना इसका उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: भूमिका और उदाहरण अलग स्पष्ट करें; राष्ट्रभक्तों के बारे में गद्यांश से बाहर की घटनाएँ जोड़ना आवश्यक नहीं है।

2(झ). व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्त्व हैं । कैसे ? तर्क सहित उत्तर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत स्वार्थ में निजी हित प्रधान होता है, जबकि राष्ट्रीय भावना में देशहित को प्राथमिकता मिलती है।
- विरोध का तर्क गद्यांश के स्व-त्याग, संकीर्णता और पारस्परिक स्नेह संबंधी कथनों से बनता है।

चरण 1: दोनों की प्राथमिकता पहचानिए व्यक्तिगत स्वार्थ व्यक्ति को अपने लाभ, अहं और सीमित समूह तक बाँधता है। वह दूसरों के साथ धर्म, जाति या कुल के आधार पर व्यवहार कर सकता है, जिससे उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। इसके विपरीत राष्ट्रीय भावना व्यक्ति को पूरे देश के हित के लिए जीने और काम करने की प्रेरणा देती है। उसमें सभी देशवासियों के प्रति स्नेह और सहयोग का स्थान है।

चरण 2: विरोध का तर्क स्थापित कीजिए गद्यांश में राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त देश को प्राथमिकता देना बताई गई है, भले ही इसके लिए स्व को मिटाना पड़े। स्वार्थ त्याग से बचाता है, जबकि राष्ट्रीयता आवश्यकता पड़ने पर त्याग माँगती है। स्वार्थ से उपजा भेदभाव फूट बढ़ाता है और उसका लाभ दूसरे उठाते हैं; राष्ट्रीय भावना इन बाधाओं को भूलकर एकता बनाए रखने की अपेक्षा करती है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्तिगत स्वार्थ अपना लाभ सर्वोपरि रखता है, जबकि राष्ट्रीय भावना देशहित को सर्वोपरि मानकर निजी हित के त्याग की माँग करती है। पहला संकीर्णता और फूट बढ़ाता है, दूसरी पारस्परिक स्नेह एवं एकता पर आधारित है; इसी कारण दोनों परस्पर विरोधी हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों की प्राथमिकता की तुलना करें और स्व-त्याग तथा भेदभाव के परिणाम से अपना तर्क सिद्ध करें।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : समाज में बढ़ती अराजकता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, कारण, प्रभाव, समाधान और उपसंहार क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- सामाजिक समस्या का विवेचन संतुलित भाषा में होना चाहिए; किसी पूरे समुदाय पर दोषारोपण नहीं किया जाता।

चरण 1: रूपरेखा तैयार कीजिए आरंभ में अराजकता का अर्थ स्पष्ट करें। उसके बाद असहिष्णुता, स्वार्थ, कानून के प्रति उपेक्षा और अफवाहों जैसे कारणों पर चर्चा करें। जनजीवन पर इनके प्रभाव बताते हुए नागरिक जिम्मेदारी, संवेदनशील प्रशासन और शिक्षा के उपाय सुझाएँ। अंत में शांतिपूर्ण तथा न्यायपूर्ण समाज की आवश्यकता पर विचार समेटें।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध समाज में बढ़ती अराजकता

समाज का आधार आपसी विश्वास, सहयोग और व्यवस्था है। जब लोग नियमों की अवहेलना करते हैं, दूसरों के अधिकारों को चोट पहुँचाते हैं और समस्याओं का समाधान हिंसा से खोजते हैं, तब अराजकता बढ़ती है। यह केवल कानून की समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता की कमी का भी संकेत है।

आज छोटी असहमति पर झगड़ा, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान और अफवाहों के आधार पर उत्तेजित व्यवहार चिंता उत्पन्न करते हैं। निजी स्वार्थ, अधैर्य और असहिष्णुता इन प्रवृत्तियों को बढ़ाते हैं। अन्याय का अनुभव तथा शिकायतों की समय पर सुनवाई न होना भी लोगों में असंतोष पैदा करता है। जब विवेक का स्थान भीड़ का आवेग ले लेता है, तब निर्दोष व्यक्ति भी संकट में पड़ जाते हैं।

अराजकता का सबसे अधिक प्रभाव सामान्य नागरिक पर पड़ता है। आवागमन रुकता है, व्यापार प्रभावित होता है और बच्चों की पढ़ाई बाधित होती है। भय के वातावरण में लोग एक दूसरे पर विश्वास खोने लगते हैं। सार्वजनिक संसाधनों की हानि अंततः पूरे समाज की हानि बनती है। अपनी माँग रखने का अधिकार दूसरों के जीवन और सुरक्षा को संकट में डालने की अनुमति नहीं देता।

इस समस्या का समाधान केवल कठोरता से संभव नहीं है। प्रशासन को निष्पक्ष और उत्तरदायी बनना होगा। शिकायतों का समयबद्ध निवारण तथा कानून का समान पालन आवश्यक है। परिवार और विद्यालय बच्चों में संवाद, संयम और दूसरों के प्रति सम्मान के संस्कार विकसित करें। नागरिक किसी सूचना को आगे भेजने से पहले उसकी सत्यता जाँचें तथा विवाद के समय अफवाहों से बचें। शांतिपूर्ण

विरोध और रचनात्मक संवाद को बढ़ावा देना चाहिए।

व्यवस्था बनाए रखना सरकार और समाज दोनों की साझा जिम्मेदारी है। यदि हम अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझें, तो अराजकता पर अंकुश लगाया जा सकता है। जागरूक, सहिष्णु और जिम्मेदार नागरिक ही सुरक्षित तथा न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत निबंध अराजकता का अर्थ, उसके कारण और दुष्परिणाम स्पष्ट करते हुए कानून के निष्पक्ष पालन, संवाद तथा जिम्मेदार नागरिक आचरण को समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: निबंध में समस्या गिनाने तक सीमित न रहें; प्रत्येक प्रमुख कारण के बाद व्यावहारिक समाधान की दिशा भी रखें।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : युवाओं पर बढ़ता उत्तरदायित्व [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- युवाशक्ति, सामाजिक चेतना और जिम्मेदार नागरिकता पर विचारपूर्ण निबंध लिखना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार तथा सार्थक उपसंहार होना चाहिए। भाषा सहज, विचार स्पष्ट और अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद संक्षिप्त भूमिका लिखें। मध्य भाग में विषय के प्रमुख पक्ष अलग-अलग अनुच्छेदों में रखें। अंत में मूल विचार को आगे बढ़ाता हुआ सकारात्मक निष्कर्ष दें। इस प्रश्न में शब्द-सीमा निर्दिष्ट नहीं है, इसलिए विषय के आवश्यक पक्षों को संतुलित विस्तार दें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना शिक्षा, परिवार, समाज, लोकतंत्र और पर्यावरण के प्रति युवाओं के दायित्वों को ठोस उदाहरणों से स्पष्ट करें। केवल समस्या गिनाने के स्थान पर उनके व्यावहारिक समाधान भी सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध युवाओं पर बढ़ता उत्तरदायित्व

युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा, कल्पनाशीलता और परिवर्तन की आशा होते हैं। आज भारत के युवाओं के सामने अवसरों का विस्तार हुआ है, किंतु उसी अनुपात में उनका उत्तरदायित्व भी बढ़ा है। अब व्यक्तिगत सफलता के साथ समाज और देश के विकास में योगदान देना भी उनकी भूमिका का आवश्यक हिस्सा है।

युवाओं का पहला कर्तव्य ज्ञान, कौशल और अच्छे चरित्र का विकास करना है। परीक्षा में सफलता पर्याप्त नहीं है; ईमानदारी, परिश्रम और विवेक भी जरूरी हैं। तकनीक का उपयोग सीखने और रचनात्मक कार्यों में होना चाहिए। सामाजिक माध्यमों पर मिली किसी सूचना को बिना जाँच आगे भेजना अफवाह और तनाव बढ़ा सकता है। जिम्मेदार युवा तथ्य की जाँच करके ही अपनी राय बनाता है।

परिवार और समाज के प्रति भी युवाओं की जिम्मेदारी है। बुजुर्गों का सम्मान, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई में सहायता और श्रम के प्रति आदर समाज को संवेदनशील बनाते हैं। जाति, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव का विरोध करके युवा राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर सकते हैं। लोकतंत्र में जागरूक मतदान तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा भी आवश्यक हैं।

बेरोजगारी और पर्यावरण संकट जैसी चुनौतियाँ पहल की माँग करती हैं। कौशल सीखना, स्वरोजगार अपनाना, जल बचाना और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखना छोटे किंतु उपयोगी कदम हैं। परिवर्तन केवल भाषणों से नहीं, निरंतर आचरण से आता है।

अतः युवाओं को अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहना चाहिए। उनकी ऊर्जा जब विवेक, संवेदना और अनुशासन से जुड़ती है, तभी वह राष्ट्रनिर्माण की शक्ति बनती है। जिम्मेदार युवा ही सुरक्षित, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील भविष्य की नींव रख सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस निबंध का केंद्रीय विचार है कि युवाओं की सजगता, संवेदना और जिम्मेदार आचरण राष्ट्र के भविष्य को दिशा देते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े चार ठोस बिंदु लिख लें; फिर उन्हें भूमिका, उदाहरणयुक्त विवेचन और उपसंहार के क्रम में जोड़ें।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : भारतीय खेल और संस्कार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खेलों के माध्यम से विकसित होने वाले जीवनमूल्यों पर विषयानुकूल निबंध लिखना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार तथा सार्थक उपसंहार होना चाहिए। भाषा सहज, विचार स्पष्ट और अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद संक्षिप्त भूमिका लिखें। मध्य भाग में विषय के प्रमुख पक्ष अलग-अलग अनुच्छेदों में रखें। अंत में मूल विचार को आगे बढ़ाता हुआ सकारात्मक निष्कर्ष दें। इस प्रश्न में शब्द-सीमा निर्दिष्ट नहीं है, इसलिए विषय के आवश्यक पक्षों को संतुलित विस्तार दें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना कबड्डी, खो-खो और अन्य परिचित खेलों के उदाहरण देकर अनुशासन, सहयोग, समानता तथा खेलभावना का संबंध स्पष्ट करें। खेल की उपलब्धियों के साथ उसके संस्कारात्मक पक्ष पर ध्यान दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध भारतीय खेल और संस्कार

भारतीय जीवन में खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहे हैं। वे शरीर को स्वस्थ रखने के साथ मनुष्य को मिलकर जीना भी सिखाते हैं। कबड्डी, खो-खो, कुश्ती और अनेक स्थानीय खेल हमारी सामाजिक परंपरा का हिस्सा हैं। इनमें शारीरिक दक्षता के साथ साहस, संयम और पारस्परिक विश्वास की आवश्यकता होती है।

खेल का पहला संस्कार अनुशासन है। खिलाड़ी को समय पर अभ्यास करना, नियम मानना और निर्णायक के निर्णय का सम्मान करना पड़ता है। जीतने की इच्छा स्वाभाविक है, लेकिन अनुचित साधनों से मिली विजय खेल की गरिमा नष्ट करती है। इसलिए ईमानदारी और निष्पक्षता किसी भी सफलता से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। हार मिलने पर अपनी कमियों को स्वीकार करना तथा विजेता को बधाई देना विनम्रता सिखाता है।

सामूहिक खेल सहयोग और उत्तरदायित्व विकसित करते हैं। कबड्डी में एक खिलाड़ी का साहस तभी सफल होता है जब पूरी टोली सतर्क हो। खो-खो में गति के साथ तालमेल आवश्यक है। ऐसे अनुभव बताते हैं कि व्यक्तिगत प्रतिभा और सामूहिक प्रयास एक-दूसरे के पूरक हैं। मैदान में जाति, धन और भाषा की दीवारें कमजोर पड़ती हैं; सभी खिलाड़ी समान नियमों के अंतर्गत भाग लेते हैं।

आज खेलों पर अत्यधिक व्यावसायिक दबाव और हर कीमत पर जीतने की मानसिकता भी दिखाई देती है। इनसे बचने के लिए विद्यालयों और परिवारों को खेलभावना का महत्त्व समझाना चाहिए। लड़कियों तथा सीमित संसाधनों वाले बच्चों को भी खेलने के समान अवसर मिलने चाहिए। स्थानीय खेल कम साधनों में अधिक बच्चों को जोड़ सकते हैं।

भारतीय खेलों की सार्थकता पदकों तक सीमित नहीं है। वे स्वस्थ शरीर, संतुलित मन और जिम्मेदार नागरिक तैयार कर सकते हैं। जब खेल में सम्मान, सहयोग और ईमानदारी जुड़े रहें, तभी हमारी खेलपरंपरा संस्कारों की सच्ची पाठशाला बनती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस निबंध का केंद्रीय विचार है कि खेलों का वास्तविक मूल्य स्वास्थ्य के साथ अनुशासन, सहयोग और निष्पक्षता के विकास में है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े चार ठोस बिंदु लिख लें; फिर उन्हें भूमिका, उदाहरणयुक्त विवेचन और उपसंहार के क्रम में जोड़ें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : हिन्दी : हमारा स्वाभिमान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा, सांस्कृतिक पहचान और भाषायी सम्मान पर संतुलित निबंध लिखना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार तथा सार्थक उपसंहार होना चाहिए। भाषा सहज, विचार स्पष्ट और अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद संक्षिप्त भूमिका लिखें। मध्य भाग में विषय के प्रमुख पक्ष अलग-अलग अनुच्छेदों में रखें।

अंत में मूल विचार को आगे बढ़ाता हुआ सकारात्मक निष्कर्ष दें। इस प्रश्न में शब्द-सीमा निर्दिष्ट नहीं है, इसलिए विषय के आवश्यक पक्षों को संतुलित विस्तार दें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना हिन्दी के सांस्कृतिक तथा व्यावहारिक महत्त्व को स्पष्ट करें। उसके प्रसार के ठोस उपाय सुझाते समय दूसरी भारतीय भाषाओं के सम्मान और बहुभाषिकता को भी उचित स्थान दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध हिन्दी : हमारा स्वाभिमान

भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं, हमारी स्मृतियों और संस्कृति की वाहक भी है। हिन्दी से करोड़ों लोगों के अनुभव, लोकगीत और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ जुड़ी हैं। इसलिए हिन्दी के प्रति सम्मान हमारे सांस्कृतिक स्वाभिमान का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। अपनी भाषा में सहज होकर सोचना और अभिव्यक्त होना आत्मविश्वास देता है।

हिन्दी का साहित्य विविध जीवनानुभवों से समृद्ध है। कबीर की निर्भीक वाणी, तुलसी की लोकचेतना और प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि पाठक को मानवीय संवेदना से जोड़ती है। हिन्दी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद बढ़ाने में भी भूमिका निभाई है। भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में उसका प्रशासनिक महत्त्व है; फिर भी भारत की भाषायी विविधता उसकी साझा संपदा है। हिन्दी का सम्मान दूसरी भाषाओं के अपमान पर आधारित नहीं हो सकता।

आज शिक्षा, रोजगार और तकनीक में दूसरी भाषाओं का ज्ञान उपयोगी है। किंतु इसके कारण हिन्दी बोलने वाले को हीन समझना गलत है। भाषा योग्यता का अकेला मापदंड नहीं है। हमें विदेशी भाषाएँ सीखते हुए अपनी भाषा में ज्ञान और सृजन की क्षमता भी बढ़ानी चाहिए। हिन्दी में विज्ञान, कानून और तकनीक की सुबोध सामग्री उपलब्ध कराना इस दिशा में जरूरी कार्य है।

हिन्दी का विकास केवल विशेष दिवस मनाने से नहीं होगा। पुस्तकें पढ़ना, शुद्ध और सहज भाषा में लिखना, अनुवाद करना तथा डिजिटल माध्यमों पर उपयोगी सामग्री तैयार करना अधिक प्रभावी कदम हैं। कार्यालयों में स्पष्ट हिन्दी और विद्यालयों में रुचिकर शिक्षण से उसका प्रयोग बढ़ सकता है। कठिन शब्दों का अनावश्यक बोझ डालने के स्थान पर संप्रेषण की सहजता बनाए रखनी चाहिए।

हिन्दी हमारा स्वाभिमान तभी बनेगी जब उसका सम्मान व्यवहार में दिखाई देगा। अन्य भाषाओं से सीखते हुए अपनी भाषा को ज्ञान, संवेदना और रचनात्मकता से समृद्ध करना ही उसके प्रति सच्चा प्रेम है।

चरण 4: निष्कर्ष इस निबंध का केंद्रीय विचार है कि हिन्दी के प्रति स्वाभिमान उसके सार्थक प्रयोग तथा सभी भाषाओं के सम्मान से पुष्ट होता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े चार ठोस बिंदु लिख लें; फिर उन्हें भूमिका, उदाहरणयुक्त विवेचन और उपसंहार के क्रम में जोड़ें।

---

4. भारतीय युवाओं में क्रिकेट खेल के प्रति अत्यधिक लगाव की चर्चा करते हुए अन्य खेलों के प्रति उदासीनता के बारे में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र लिखते समय जनहित की समस्या, उसके प्रभाव तथा व्यावहारिक सुझाव स्पष्ट और विनम्र भाषा में रखने चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और हस्ताक्षर क्रम से दिए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना यह पत्र समाचार-पत्र के संपादक को लिखा जाएगा। विषय में क्रिकेट की लोकप्रियता के साथ अन्य खेलों की उपेक्षा का उल्लेख होगा। मुख्य भाग में युवाओं का झुकाव, प्रचार और सुविधाओं की असमानता तथा संतुलित खेल-संस्कृति के उपाय रखे जाएँगे।

चरण 2: तर्क और सुझाव का चयन क्रिकेट के प्रति उत्साह का सम्मान करते हुए समस्या को दूसरे खेलों की उपेक्षा के रूप में प्रस्तुत करना उचित है। विद्यालयों में विविध खेलों के मैदान और प्रशिक्षण, प्रतियोगिताओं के आयोजन तथा समाचार माध्यमों में खिलाड़ियों को समान अवसर देने का सुझाव दिया जा सकता है। किसी खेल या उसके प्रशंसकों पर व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाया जाएगा।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

15 मार्च, 2015
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय: क्रिकेट की अत्यधिक लोकप्रियता और अन्य खेलों की उपेक्षा।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं भारतीय युवाओं में क्रिकेट के प्रति अत्यधिक लगाव तथा अन्य खेलों के प्रति बढ़ती उदासीनता की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। क्रिकेट के मैचों, विज्ञापनों और खिलाड़ियों की चर्चा इतनी अधिक होती है कि हॉकी, फुटबॉल, एथलेटिक्स तथा कबड्डी जैसे खेल पीछे छूट जाते हैं। युवा भी प्रसिद्धि और अवसरों की आशा में मुख्यत: क्रिकेट की ओर आकर्षित होते हैं।
क्रिकेट से प्रेम स्वाभाविक है, किंतु अन्य खेलों की उपेक्षा से अनेक प्रतिभाएँ सामने नहीं आ पातीं। विद्यालयों में विभिन्न खेलों के लिए मैदान, प्रशिक्षक और नियमित प्रतियोगिताएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। समाचार माध्यम अन्य खेलों की उपलब्धियों को भी प्रमुखता दें। सरकार और प्रायोजक उनके खिलाड़ियों को उचित सुविधाएँ एवं प्रोत्साहन दें।
आशा है, आप इस विषय पर लेख और समाचार प्रकाशित करके संतुलित खेल-संस्कृति विकसित करने में सहयोग करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में क्रिकेट के प्रति लगाव की चर्चा करते हुए अन्य खेलों की उपेक्षा पर चिंता और उनके प्रोत्साहन के उपाय प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: विषय में दोनों पक्ष लिखें और मुख्य भाग में समस्या के साथ ठोस सुधारात्मक सुझाव अवश्य दें।

अथवा

4. दूरदर्शन केन्द्र निदेशक को प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए ।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दूरदर्शन के निदेशक को लिखा जाने वाला पत्र औपचारिक शिकायत एवं सुझाव-पत्र है। उसमें समस्या के कारण और दर्शकों पर प्रभाव स्पष्ट होने चाहिए।
- प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता और स्तर में गिरावट, दोनों पर चर्चा करते हुए जनोपयोगी प्रसारण की माँग करनी है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करना प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर दूरदर्शन केंद्र के निदेशक को संबोधित करें। विषय में प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता तथा उनके गिरते स्तर का उल्लेख करें। भाषा शिष्ट रहे और शिकायत के साथ सुधार का अनुरोध किया जाए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले दूरदर्शन की शिक्षा, सूचना और स्वस्थ मनोरंजन संबंधी भूमिका बताएँ। फिर व्यावसायिकता, विज्ञापन-प्रधान प्रस्तुति तथा दोहराव से दर्शकों को होने वाली असुविधा का उल्लेख करें। कार्यक्रमों की समीक्षा, विविधता और गुणवत्तापूर्ण सामग्री बढ़ाने के सुझाव दें। अप्रमाणित आँकड़े या किसी कार्यक्रम पर निराधार आरोप न जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 18, शांति विहार
नई दिल्ली

15 मार्च, 2015
सेवा में,
निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केंद्र,
नई दिल्ली।
विषय: प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते स्तर के संबंध में।
महोदय,
मैं आपके केंद्र का नियमित दर्शक हूँ। दूरदर्शन से दर्शकों को विश्वसनीय सूचना, शिक्षा और स्वस्थ मनोरंजन की अपेक्षा रहती है। किंतु प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता तथा उनकी विषयवस्तु के गिरते स्तर से चिंता हो रही है। अनेक प्रस्तुतियों में सार्थक सामग्री की अपेक्षा उत्पादों के प्रचार और व्यावसायिक आकर्षण को अधिक स्थान मिलता है। बार-बार आने वाले विज्ञापन कार्यक्रमों की निरंतरता भी भंग करते हैं।
एक जैसी कथाओं और अनावश्यक खींचतान से दर्शकों की रुचि घटती है। बच्चों और युवाओं के लिए ज्ञानवर्धक तथा प्रेरक कार्यक्रमों की आवश्यकता है। साहित्य, विज्ञान, संस्कृति, पर्यावरण और ग्रामीण जीवन से जुड़े कार्यक्रमों को पर्याप्त समय मिलना चाहिए।
आपसे अनुरोध है कि प्रसारित कार्यक्रमों की नियमित समीक्षा कराएँ, विज्ञापनों की अवधि नियंत्रित रखें और चयन में गुणवत्ता को प्राथमिकता दें। दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ लेकर विविध तथा उपयोगी प्रस्तुतियाँ बढ़ाई जाएँ। आशा है, आप इस विषय पर शीघ्र ध्यान देंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में निदेशक से प्रायोजित कार्यक्रमों की समीक्षा, विज्ञापनों पर नियंत्रण और शिक्षाप्रद तथा गुणवत्तापूर्ण प्रसारण बढ़ाने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत को दोनों बिंदुओं तक केंद्रित रखें और समापन से पहले निदेशक से स्पष्ट कार्रवाई का अनुरोध करें।

5(क). 'बीट' से क्या आशय है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में समाचार-संकलन का काम क्षेत्रों या विषयों के आधार पर बाँटा जाता है।
- किसी संवाददाता को नियमित कवरेज के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र उसकी बीट कहलाता है।

चरण 1: पद का संदर्भ समझना यहाँ बीट का अर्थ पत्रकारिता में कार्य-विभाजन से है। समाचार-पत्र में अलग-अलग संवाददाताओं को अलग क्षेत्रों की घटनाओं और गतिविधियों की जानकारी जुटाने की जिम्मेदारी दी जाती है।

चरण 2: उदाहरण से अर्थ स्पष्ट करना शिक्षा, अपराध, राजनीति या खेल जैसे क्षेत्र किसी संवाददाता की बीट हो सकते हैं। वह अपने निर्धारित क्षेत्र के स्रोतों से नियमित संपर्क रखकर समाचार एकत्र करता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-संकलन के लिए किसी संवाददाता को सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विषय 'बीट' कहलाता है; जैसे शिक्षा या अपराध।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा में संवाददाता, निश्चित क्षेत्र और समाचार-संकलन—इन तीन बातों को जोड़ें।

5(ख). भारत में पहला समाचार-पत्र कब और कहाँ प्रकाशित हुआ ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्रों के इतिहास से जुड़े प्रश्न में समय और स्थान, दोनों स्पष्ट लिखना आवश्यक है।
- भारत का पहला समाचार-पत्र जेम्स ऑगस्टस हिकी का 'बंगाल गजट' था।

चरण 1: समाचार-पत्र की पहचान भारत में प्रकाशित पहले समाचार-पत्र को 'बंगाल गजट' अथवा 'हिकीज बंगाल गजट' कहा जाता है। इसका प्रकाशन जेम्स ऑगस्टस हिकी ने आरंभ किया था। यह पहचान समय और स्थान के उत्तर को स्पष्ट करती है।

चरण 2: समय और स्थान बताना इस समाचार-पत्र का प्रकाशन 29 जनवरी, 1780 को कलकत्ता में शुरू हुआ। कलकत्ता का वर्तमान नाम कोलकाता है। प्रश्न में पूछे गए दोनों तथ्य वर्ष 1780 और स्थान कलकत्ता हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भारत का पहला समाचार-पत्र 'बंगाल गजट' 29 जनवरी, 1780 को कलकत्ता में प्रकाशित हुआ।

त्वरित सुझाव: कब और कहाँ पूछे जाने पर उत्तर में वर्ष तथा शहर साथ लिखें; केवल समाचार-पत्र का नाम पर्याप्त नहीं है।

5(ग). प्रिंट मीडिया की दो विशेषताएँ लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट मीडिया में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आदि मुद्रित संचार-माध्यम आते हैं।
- इनकी सामग्री को पाठक अपनी सुविधा से पढ़ सकता है और सुरक्षित रखकर फिर देख सकता है।

चरण 1: पठन की सुविधा बताना पाठक मुद्रित सामग्री को अपनी इच्छा के समय और अपनी गति से पढ़ सकता है। कठिन अंश को दोबारा पढ़ना या आवश्यक समाचार पर अधिक समय देना भी संभव है; उसे प्रसारण के निश्चित समय पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

चरण 2: स्थायित्व बताना मुद्रित सामग्री को काटकर, सँभालकर या फाइल में रखकर भविष्य में संदर्भ के लिए उपयोग किया जा सकता है। लिखित रूप में उपलब्ध होने से किसी सूचना को बार-बार देखना आसान रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट मीडिया की दो विशेषताएँ हैं: (1) इसे पाठक अपनी सुविधा और गति से पढ़ सकता है। (2) इसकी सामग्री को सुरक्षित रखकर दोबारा पढ़ा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग-अलग लिखें: अपनी गति से पढ़ने की सुविधा और भविष्य के लिए सामग्री का संरक्षण।

5(घ). पीत पत्रकारिता से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में समाचारों की विश्वसनीयता और जनहित आवश्यक हैं।
- पीत पत्रकारिता सत्य की अपेक्षा सनसनी और व्यावसायिक लाभ को महत्त्व देती है।

चरण 1: प्रवृत्ति पहचानिए जब समाचारों को सत्यापित तथ्यों के आधार पर रखने के स्थान पर उत्तेजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, तब उनका उद्देश्य पाठक को सही जानकारी देना नहीं रह जाता। ऐसी प्रस्तुति पाठक की जिज्ञासा और भावनाओं का अनुचित लाभ उठाती है।

चरण 2: परिभाषा स्पष्ट कीजिए पाठकों को आकर्षित करने तथा बिक्री या लोकप्रियता बढ़ाने के लिए सनसनीखेज, अतिरंजित, भ्रामक अथवा अपुष्ट समाचार प्रकाशित करना पीत पत्रकारिता कहलाता है। इसमें तथ्यपरकता, निष्पक्षता और पत्रकारिता की नैतिकता की

उपेक्षा होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पीत पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जिसमें बिक्री और लोकप्रियता बढ़ाने के लिए सनसनीखेज तथा अतिरंजित या भ्रामक समाचार प्रस्तुत किए जाते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनी, व्यावसायिक लाभ और तथ्यपरकता की उपेक्षा का संबंध स्पष्ट करें।

5(ङ). 'समाचार' शब्द को परिभाषित कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का संबंध नवीन घटनाओं और सार्वजनिक रुचि से होता है।
- समाचार में सूचना की सत्यता, तथ्यपरकता और महत्त्व आवश्यक हैं।

चरण 1: समाचार के आधार समझिए प्रतिदिन अनेक घटनाएँ होती हैं, किंतु प्रत्येक घटना समाचार नहीं बनती। ऐसी घटना या विचार, जिसमें नवीनता हो तथा जिसे जानने में लोगों की रुचि हो या जिसका उनके जीवन पर प्रभाव पड़े, समाचार का आधार बन सकता है।

चरण 2: परिभाषा दीजिए किसी नवीन, महत्त्वपूर्ण और जनरुचि से संबंधित घटना, तथ्य या विचार का सत्य तथा तथ्यपरक विवरण समाचार कहलाता है। उसका उद्देश्य पाठक या श्रोता को घटना के बारे में विश्वसनीय जानकारी देना है; केवल अफवाह या निजी अनुमान को समाचार नहीं कहा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष किसी नवीन, महत्त्वपूर्ण तथा जनरुचि से संबंधित घटना या विचार का सत्य और तथ्यपरक विवरण समाचार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: समाचार की परिभाषा याद करते समय नवीनता, जनरुचि और सत्यता को एक साथ जोड़ें।

6. 'आँखों देखा जलप्रलय' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का क्रमबद्ध विवेचन, प्रभावपूर्ण शीर्षक और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- आँखों देखे प्रसंग में दृश्य, मानवीय अनुभव और उनसे निकलने वाली सीख को जोड़ा जाता है।

चरण 1: रूपरेखा तैयार कीजिए शीर्षक और लेखक के नाम के बाद वर्षा तथा बाढ़ की पृष्ठभूमि दें। फिर जलप्रलय के दृश्य, लोगों की कठिनाइयाँ, बचाव कार्य और सामुदायिक सहयोग का वर्णन करें। अंत में आपदा की रोकथाम और तैयारी का संदेश दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख आँखों देखा जलप्रलय

लेखक : अजय कुमार

लगातार तीन दिनों से हो रही वर्षा ने हमारे नगर का स्वरूप बदल दिया था। सुबह खिड़की से बाहर देखा तो जिस सड़क पर प्रतिदिन चहल-पहल रहती थी, वहाँ मटमैली जलधारा बह रही थी। नदी का पानी तटबंध पार करके बस्तियों में घुस आया था। देखते-देखते निचले घरों के दरवाजे डूब गए और लोग छतों पर शरण लेने लगे।

हम ऊँची जगह पर बने विद्यालय के पास पहुँच गए। वहाँ से चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। कहीं बर्तन बह रहे थे, कहीं लकड़ी के टुकड़े। एक वृद्ध अपनी दवाइयों के लिए परेशान थे और एक बच्चा अपनी माँ से बिछुड़कर रो रहा था। मकान, दुकान और रास्ते सब एक जैसे जलमग्न थे। प्रकृति के इस प्रचंड रूप ने मनुष्य की विवशता सामने रख दी थी।

कुछ समय बाद बचाव दल नाव लेकर पहुँचा। पहले बच्चों, वृद्धों और बीमार लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाया गया। स्थानीय युवकों

ने भोजन और पीने के पानी की व्यवस्था की। विद्यालय में बने राहत शिविर में अनजान लोग भी एक-दूसरे का सहारा बन गए। एक महिला ने अपने पास बची रोटियाँ दूसरे परिवार के बच्चों में बाँट दीं। संकट के बीच यह मानवीय संवेदना आशा जगा रही थी।

इस जलप्रलय ने समझाया कि आपदा से पहले की तैयारी कितनी आवश्यक है। नदी के किनारों पर अतिक्रमण रोकना, जलनिकासी बनाए रखना और चेतावनी मिलने पर समय रहते सुरक्षित स्थानों पर जाना जरूरी है। प्रशासन तथा नागरिकों का सहयोग ही नुकसान घटा सकता है। पानी उतरने पर जीवन फिर सँवर जाएगा, पर उस भयावह दृश्य और लोगों के साहस की स्मृति लंबे समय तक बनी रहेगी।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख प्रत्यक्षदर्शी अनुभव को मानवीय संवेदना और आपदा से बचाव की सीख से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य-वर्णन के साथ पीड़ितों की दशा और सहयोग का एक ठोस प्रसंग जोड़ें, फिर उपयोगी निष्कर्ष दें।

अथवा

6(1). 'टूटते-बिखरते रिश्ते' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में सामाजिक समस्या का परिचय, कारण, प्रभाव और समाधान क्रम से आते हैं।
- रिश्तों के विषय में संवेदनशील भाषा तथा संतुलित दृष्टिकोण प्रभावी होते हैं।

चरण 1: विषय और संरचना निर्धारित कीजिए प्रभावपूर्ण शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में संबंधों का महत्त्व स्पष्ट करें। मुख्य भाग में व्यस्तता, स्वार्थ, संवादहीनता और असहिष्णुता जैसे कारणों का विश्लेषण करें। निष्कर्ष में संवाद, सम्मान और सहयोग के व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख टूटते-बिखरते रिश्ते

लेखक : अजय कुमार

रिश्ते मनुष्य के जीवन को अपनापन और सुरक्षा देते हैं। परिवार का स्नेह तथा मित्रों का सहयोग कठिन समय में हमारी शक्ति बनते हैं। फिर भी आज अनेक लोग अपनों के बीच रहते हुए भी अकेलापन महसूस करते हैं। भौतिक सुविधाओं की वृद्धि के साथ संबंधों में बढ़ती दूरी हमारे समय की गंभीर चिंता है।

इस दूरी का एक बड़ा कारण संवाद की कमी है। घर के सदस्य दिनभर व्यस्त रहते हैं और जब साथ बैठते हैं, तब भी मोबाइल फोन उनका ध्यान बाँट देते हैं। मन की छोटी शिकायतें सुनी नहीं जातीं और धीरे-धीरे अविश्वास में बदल जाती हैं। उपलब्धियों तथा आय के आधार पर संबंधों का मूल्यांकन करने से अपनापन और कमजोर होता है। जब हर व्यक्ति केवल अपनी सुविधा को महत्त्व देता है, तब सहयोग का स्थान अपेक्षा और शिकायत ले लेती है।

पीढ़ियों के बीच विचारों का अंतर भी कभी-कभी टकराव बढ़ाता है। युवा स्वतंत्रता चाहते हैं और बुजुर्ग अपने अनुभवों को मान्यता दिलाना चाहते हैं। दोनों पक्ष एक-दूसरे को सुनें तो यह अंतर सीखने का अवसर बन सकता है। समस्या तब होती है जब असहमति को अपमान समझ लिया जाता है। बच्चों और बुजुर्गों पर टूटते संबंधों का विशेष प्रभाव पड़ता है; वे असुरक्षा और उपेक्षा अनुभव कर सकते हैं।

रिश्तों को बचाने के लिए बड़े उपदेशों से अधिक छोटी आदतों की जरूरत है। प्रतिदिन कुछ समय साथ बिताना, ध्यान से सुनना, गलती पर क्षमा माँगना और कठिन समय में मदद करना विश्वास बढ़ाता है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा गरिमा का सम्मान आवश्यक है। संबंध निभाने का अर्थ अपमान सहना नहीं, बल्कि सम्मानपूर्ण व्यवहार की नींव मजबूत करना है।

रिश्ते अधिकार जताने से नहीं, संवेदनशीलता से सँवरते हैं। यदि हम अपने अहं को थोड़ा पीछे रखकर दूसरे के सुख-दुख को समझें, तो बिखराव के स्थान पर अपनापन लौट सकता है। संबंधों की सच्ची पूँजी धन नहीं, समय, विश्वास और स्नेह है।

चरण 3: निष्कर्ष यह आलेख संबंधों के बिखराव के कारण समझाकर संवाद, पारस्परिक सम्मान और संवेदनशीलता को समाधान बनाता है।

त्वरित सुझाव: कारण गिनाने के बाद हर प्रमुख समस्या से जुड़ा व्यावहारिक समाधान भी लिखें।

अथवा

6(2). हाल ही में पढ़े किसी मनोरंजक कहानी संग्रह की समीक्षा कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में कृति का परिचय, विषयवस्तु, भाषा-शैली और संतुलित मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है।
- कहानी की पूरी कथा बताने के बजाय उसकी रोचकता, मानवीय संवेदना तथा पाठकीय प्रभाव स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: समीक्षा की रूपरेखा मनोरंजक कहानी-संग्रह के रूप में प्रेमचंद के 'मानसरोवर' को चुना जा सकता है। लेखक और कृति का संक्षिप्त परिचय देने के बाद कुछ प्रमुख कहानियों की विशेषताएँ बतानी चाहिए। अंत में भाषा, प्रभाव और उपयोगिता का मूल्यांकन देना उचित है। किसी विशेष संस्करण का प्रकाशक, मूल्य या प्रकाशन-वर्ष ज्ञात न होने पर उन्हें कल्पना से नहीं लिखना चाहिए।

चरण 2: कथ्य और मूल्यांकन के बिंदु 'ईदगाह' में हामिद की संवेदना, 'पूस की रात' में किसान का संघर्ष और 'पंच परमेश्वर' में न्याय-बोध जैसे प्रसंग समीक्षा को ठोस आधार देते हैं। मनोरंजन का अर्थ केवल हँसाना नहीं है; रोचक घटनाओं के माध्यम से पाठक को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ना भी साहित्य का उद्देश्य है। प्रशंसा के साथ यह संकेत भी दिया जा सकता है कि ग्रामीण जीवन से अपरिचित पाठक को कुछ शब्दों का अर्थ संदर्भ से समझना पड़ेगा।

चरण 3: पूर्ण आदर्श समीक्षा मानवीय जीवन का रोचक संसार : मानसरोवर

समीक्षक : एक पाठक

हाल ही में मैंने प्रेमचंद का कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' पढ़ा। इसकी कहानियाँ साधारण लोगों के सुख-दुख को इतनी आत्मीयता से प्रस्तुत करती हैं कि पाठक उनके जीवन में शामिल हो जाता है। घटनाओं का सहज प्रवाह और पात्रों की स्वाभाविक बातचीत संग्रह को रोचक बनाते हैं।

'ईदगाह' का हामिद मेले में अपने लिए खिलौना लेने के बजाय दादी के लिए चिमटा खरीदता है। उसका यह निर्णय बालमन की संवेदनशीलता को यादगार बनाता है। 'पूस की रात' किसान के जीवन की कठिनाइयों का मार्मिक चित्र खींचती है। 'पंच परमेश्वर' बताती है कि न्याय की जिम्मेदारी व्यक्ति को निजी संबंधों से ऊपर उठा सकती है। इन कहानियों में उत्सुकता के साथ विचार करने की सामग्री भी मिलती है।

प्रेमचंद की भाषा सरल, संवाद प्रभावशाली और परिवेश सजीव है। ग्रामीण जीवन के कुछ शब्द नए पाठक को कठिन लग सकते हैं, किंतु प्रसंग उनका अर्थ समझने में सहायता करते हैं। कहानियाँ उपदेश थोपने के बजाय घटनाओं से अपनी बात कहती हैं।

मेरे लिए यह संग्रह मनोरंजन और जीवन-बोध दोनों का स्रोत रहा। संवेदना, न्याय और मनुष्यता को समझने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार समीक्षा में कृति के परिचय, उदाहरणों, भाषा-शैली और संतुलित पाठकीय मूल्यांकन को स्थान दिया गया है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में कहानी का अंत खोलने से बचें और अपनी राय को किसी ठोस प्रसंग से प्रमाणित करें।

7. 'जंक फूड की समस्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को रोचक आरंभ, मानवीय अनुभव और विवेचन के सहारे प्रस्तुत करता है।
- आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, समस्या के कारण, प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान इसकी उपयोगी विशेषताएँ हैं।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति शीर्षक ऐसा हो जो स्वाद के आकर्षण और उसके पीछे छिपी समस्या की ओर ध्यान खींचे। आरंभ में विद्यालय की छुट्टी के समय खाने की दुकान का दृश्य लिया जा सकता है। इसके बाद विज्ञापन, सुविधा और खान-पान की आदतों पर विचार करके घर, विद्यालय तथा स्वयं बच्चों की भूमिका बतानी चाहिए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना हर तैयार खाद्य पदार्थ को एक जैसा बताने के बजाय अधिक नमक, चीनी और वसा वाले तथा पोषण की दृष्टि से असंतुलित भोजन की आदत पर ध्यान केंद्रित करना उचित है। बिना प्रमाण के आँकड़े देने या किसी बीमारी की निश्चित भविष्यवाणी करने की जरूरत नहीं है। स्थानीय और सुलभ विकल्प देकर फीचर को पाठक के जीवन से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर स्वाद के आकर्षण में उलझता बचपन

लेखक : एक जागरूक विद्यार्थी

छुट्टी की घंटी बजी और बच्चे स्कूल के बाहर ठेले की ओर दौड़ पड़े। किसी के हाथ में चिप्स का पैकेट था, तो कोई ठंडा पेय खरीद रहा था। बस्ते में रखा घर का भोजन फिर बच गया। यह दृश्य बताता है कि जंक फूड बच्चों की दिनचर्या में कितनी आसानी से जगह बना रहा है।

चटख रंगों वाले पैकेट, लुभावने विज्ञापन और मित्रों की पसंद इस आकर्षण को बढ़ाते हैं। जल्दी मिलने वाला भोजन व्यस्त परिवारों को सुविधाजनक भी लगता है। समस्या तब गंभीर होती है जब अधिक नमक, चीनी और वसा वाली चीजें संतुलित भोजन का स्थान लेने लगती हैं। शरीर को विविध पोषक तत्त्व चाहिए; केवल स्वाद से उनकी पूर्ति नहीं होती। ऐसी आदत नियमित शारीरिक गतिविधि की कमी के साथ मिलकर स्वास्थ्य के लिए परेशानी बढ़ा सकती है।

समाधान बच्चों को डाँटना भर नहीं है। घर में स्वादिष्ट और पौष्टिक नाश्ता उपलब्ध हो। फल, भुने चने, अंकुरित अनाज और घर का बना भोजन अच्छे विकल्प बन सकते हैं। विद्यालय की कैंटीन भी संतुलित विकल्प रखे। खरीदते समय पैकेट पर सामग्री और पोषण संबंधी जानकारी पढ़ने की आदत डाली जाए।

स्वाद का आनंद जीवन का हिस्सा है, किंतु चुनाव समझदारी से होना चाहिए। छोटी-छोटी अच्छी आदतें ही भोजन को आकर्षण के जाल से निकालकर स्वास्थ्य का साथी बना सकती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर में जीवंत दृश्य से आरंभ करके समस्या के कारण, प्रभाव और व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी छोटे जीवंत दृश्य से करें; अंत में पाठक को अपनाने योग्य कदम दें।

अथवा

7. 'स्वच्छता अभियान' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में सामाजिक विषय को अनुभव, दृश्य और विचार के मेल से रोचक बनाया जाता है।
- स्वच्छता पर लेखन में व्यक्तिगत आदतों के साथ सार्वजनिक व्यवस्था और सामूहिक जिम्मेदारी का विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम के बाद मोहल्ले की सफाई का जीवंत दृश्य प्रस्तुत किया जाए। फिर स्वच्छता के महत्व, अभियान की सीमाओं और नियमित नागरिक भागीदारी को समझाया जाए। समापन ऐसा हो जो पाठक को अपने दैनिक व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करे।

चरण 2: प्रमुख विचारों का क्रम सड़क की सफाई के साथ कचरे का पृथक्करण, नियमित संग्रह, साफ शौचालय, नालियों का रखरखाव और स्वच्छता-कर्मियों के प्रति सम्मान शामिल करना चाहिए। किसी एक दिन झाड़ू लगाने को स्थायी सफलता न माना जाए। नागरिकों तथा स्थानीय निकाय की अलग-अलग जिम्मेदारियाँ स्पष्ट करने से लेख व्यावहारिक बनता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर झाड़ू से आगे : स्वच्छता की रोज की कहानी

लेखक : एक जागरूक नागरिक

रविवार की सुबह मोहल्ले में कुछ अलग हलचल थी। बच्चे दस्ताने पहनकर कागज बटोर रहे थे और बड़े लोग गली की सफाई में जुटे थे। दो घंटे बाद सड़क चमक उठी। लेकिन असली प्रश्न अगले दिन सामने आया—क्या यह सफाई बनी रहेगी?

स्वच्छता अभियान का उद्देश्य केवल एक सुंदर तस्वीर बनाना नहीं, जीवन में साफ-सफाई की आदत विकसित करना है। खुले में पड़ा कचरा दुर्गंध फैलाता है और आसपास का वातावरण खराब करता है। गंदी नालियाँ तथा अस्वच्छ शौचालय भी रोजमर्रा के जीवन को कठिन बनाते हैं। इसलिए स्वच्छता घर की देहरी पर समाप्त नहीं हो सकती।

हमें गीला और सूखा कचरा अलग रखना चाहिए तथा उसे निर्धारित संग्रह-व्यवस्था को सौंपना चाहिए। सड़क, नाली या खाली भूखंड में कूड़ा फेंकना समस्या को केवल दूसरी जगह पहुँचाना है। स्थानीय निकाय नियमित कचरा-संग्रह और सुरक्षित निपटान सुनिश्चित करें। सार्वजनिक शौचालयों की सफाई तथा नालियों के रखरखाव पर भी ध्यान दिया जाए। सफाई-कर्मियों के श्रम का सम्मान हो और उनके लिए उचित साधन उपलब्ध हों।

विद्यालय, बाजार और आवासीय समितियाँ मिलकर लगातार निगरानी तथा जागरूकता का काम कर सकती हैं। बच्चों को भाषण से अधिक बड़ों का व्यवहार सिखाता है। स्वच्छता अभियान तभी सफल होगा जब हमारी जिम्मेदारी समारोह समाप्त होने के बाद भी जारी रहे। साफ शहर की शुरुआत अपने हाथ का कचरा सही जगह डालने से होती है।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर स्वच्छता को दैनिक आदत, नागरिक सहभागिता और नियमित सार्वजनिक व्यवस्था से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: स्वच्छता पर लिखते समय केवल नारा न दें; घर, मोहल्ले और स्थानीय निकाय के ठोस कार्य बताएँ।

---

8. ज़िन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है ।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह, अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है
संवेदन तुम्हारा है । [8 अंक]

8(क). कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार क्यों करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि जीवन में प्राप्त सुख-दुःख, गरीबी, अनुभव और विचारों को एक समग्र उपलब्धि के रूप में देखता है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: स्वीकृति का कारण कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष इसलिए स्वीकार करता है कि उसके जीवन का जो कुछ अपना है, वह उसके प्रिय को प्यारा है। प्रिय की यह आत्मीय स्वीकृति उसे अपनी परिस्थितियों के प्रति संतोष और प्रेम प्रदान करती है। इसलिए वह कठिनाइयों को भी तिरस्कार अथवा शिकायत के भाव से नहीं देखता।

चरण 2: पंक्तियों से पुष्टि अंश में कवि अपनी गरीबी, गंभीर अनुभवों, विचार-संपदा और दृढ़ता का उल्लेख करता है। ये केवल बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, उसके व्यक्तित्व के अंग हैं। इन सभी में प्रिय की संवेदना व्याप्त है। इसीलिए उनके प्रति उसका स्वीकार विवशतापूर्ण नहीं, प्रसन्न और आत्मीय है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिय को कवि का समस्त जीवन प्यारा है और उसी की संवेदना से वह जीवन अनुप्राणित है; इसलिए कवि उसकी हर परिस्थिति को खुशी से स्वीकार करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रिय की स्वीकृति और कवि की प्रसन्न स्वीकृति के बीच कारण-संबंध अवश्य स्पष्ट करें।

8(ख). गरीबी के लिए प्रयुक्त विशेषण का औचित्य और सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में विशेषण वस्तु की बाहरी अवस्था के साथ उसके प्रति कवि की भाव-दृष्टि भी व्यक्त करता है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: विशेषण और औचित्य गरीबी के लिए कवि ने 'गरबीली' विशेषण का प्रयोग किया है। सामान्यतः गरीबी अभाव और हीनता से जोड़ी जाती है, लेकिन कवि की गरीबी स्वाभिमान से युक्त है। वह निर्धन होते हुए भी आत्मगौरव और अपनी मौलिक पहचान नहीं खोता, इसलिए यह विशेषण उपयुक्त है।

चरण 2: काव्य-सौंदर्य 'गरबीली गरीबी' में अभाव और गर्व का अप्रत्याशित मेल अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है। गरीबी यहाँ दयनीय स्थिति न रहकर आत्मसम्मान का रूप ले लेती है। साथ ही दोनों शब्दों में 'ग' ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास का सौंदर्य आता है और कथन स्मरणीय बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'गरबीली' विशेषण गरीबी में भी विद्यमान आत्मगौरव को व्यक्त करता है। विरोधी प्रतीत होने वाले भावों का मेल तथा ध्वनि-साम्य इसकी सुंदरता बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल अलंकार का नाम न लिखें; पहले बताइए कि अभाव में भी कवि का स्वाभिमान कैसे सुरक्षित है।

8(ग). कवि किन्हें नवीन और मौलिक मानता है तथा क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मौलिकता व्यक्ति के निजी अनुभवों और उसके भीतर से उपजी स्वतंत्र अनुभूति से बनती है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: नवीन और मौलिक तत्व कवि अपनी गरबीली गरीबी, गंभीर जीवनानुभवों, विचार-वैभव, दृढ़ता तथा भीतर बहती संवेदनाओं की सरिता को नवीन और मौलिक मानता है। ये तत्व मिलकर उसके आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। वह अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों और विचारों को भी मूल्यवान अनुभव के रूप में स्वीकारता है।

चरण 2: मौलिकता का कारण ये किसी दूसरे से उधार लिए हुए भाव या विचार नहीं हैं, बल्कि कवि के अपने जीवन से अर्जित संपदा हैं। उसके भीतर पल-पल जाग्रत रहने वाली चेतना प्रिय की संवेदना से अनुप्राणित है। उसी आत्मीय संबंध के कारण उसके अनुभवों और आंतरिक प्रवाह में नित्य नवीनता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपनी गरीबी, अनुभव, विचार-संपदा, दृढ़ता और अंतःसंवेदना को निजी जीवन से उपजे तथा प्रिय की संवेदना से अनुप्राणित होने के कारण नवीन और मौलिक मानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वस्तुओं की सूची के बाद उनकी निजी अनुभूति और प्रिय की संवेदना से जुड़ा कारण भी लिखें।

8(घ). 'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है' – इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय शब्दार्थ से आगे जाकर उसके भाव-संबंध को स्पष्ट करने से खुलता है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: कथन का भाव 'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है' का आशय है कि प्रिय कवि के संपूर्ण अस्तित्व को अपनाता है। उसका प्रेम केवल सुख, संपन्नता अथवा किसी आकर्षक गुण तक सीमित नहीं है। वह कवि की गरीबी, कठिन अनुभवों, विचारों और दृढ़ता सहित उसके समूचे व्यक्तित्व को स्नेह देता है।

चरण 2: कवि पर प्रभाव ऐसी स्वीकृति कवि को अपने जीवन से आत्मीय संबंध स्थापित करने की शक्ति देती है। प्रिय को जो कुछ प्यारा है, उसे कवि स्वयं भी अस्वीकार नहीं कर सकता। इसीलिए वह जीवन की परिस्थितियों को शिकायत के बिना सहर्ष ग्रहण करता है और अपने भीतर प्रिय की संवेदना को अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन प्रिय के उस गहरे प्रेम को व्यक्त करता है जिसमें कवि के गुणों के साथ उसके अभाव और अनुभव भी स्वीकृत हैं। यही आत्मीयता कवि की जीवन-स्वीकृति का आधार है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय प्रिय के प्रेम को केवल संपत्ति से न जोड़ें; कवि का पूरा व्यक्तित्व इसमें शामिल है।

अथवा

8. पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास । [8 अंक]

8(क). सुनहले सूरज के सामने आने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सूर्य, उड़ान और गति के बिंब बच्चों के साहस तथा उत्साह को व्यक्त करते हैं।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: सूर्य के सामने आने का अर्थ सुनहले सूरज के सामने आने का आशय बच्चों का और अधिक उत्साह, आत्मविश्वास तथा निर्भयता के साथ पतंग उड़ाने में जुट जाना है। वे खुले आकाश में ऊँची उड़ती पतंगों के साथ अपनी आकांक्षाओं का विस्तार अनुभव करते हैं। उज्ज्वल सूर्य उनकी उमंग और जीवन की खुली संभावनाओं का बिंब बन जाता है।

चरण 2: प्रसंग से संबंध अंश में बच्चे छतों के खतरनाक किनारों से गिरते हैं और बच जाते हैं। यह अनुभव उन्हें भयभीत करके खेल से विमुख नहीं करता। उलटे वे पहले से अधिक निडर होकर फिर सामने आते हैं। इसलिए सूर्य के सामने आना उनके साहस और बढ़े हुए आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन से कवि बच्चों के बढ़े हुए साहस, उमंग और आत्मविश्वास के साथ खुले आकाश में पुनः पतंग उड़ाने का भाव व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: सूर्य के बिंब का अर्थ बताते समय उसके पहले आए गिरने और बचने के प्रसंग को अवश्य जोड़ें।

8(ख). गिरकर बचने पर बच्चों में क्या प्रतिक्रिया होती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बालमन का उत्साह कठिन अनुभव के बाद भी खेल और उड़ान की ओर लौटता है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: गिरने के बाद प्रतिक्रिया छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बच जाने पर बच्चे घबराकर पीछे नहीं हटते। उनके मन में बच निकलने का अनुभव अतिरिक्त आत्मविश्वास पैदा करता है। वे पहले से भी अधिक निडर हो जाते हैं और पतंग उड़ाने के खेल में फिर उत्साह से लग जाते हैं।

चरण 2: पंक्तियों का आधार कवि कहता है कि बच जाने पर वे 'और भी निडर' होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं। यह कथन बताता है कि जोखिम उनके उत्साह को समाप्त नहीं कर पाता। बचने का अनुभव उन्हें अपनी क्षमता पर भरोसा देता है और वे जोखिम के बावजूद खेल की ओर लौटते हैं। उनकी सक्रियता और उमंग बढ़ जाती है तथा उनके बेचैन पैर फिर खेल की ओर बढ़ने लगते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गिरकर बचने पर बच्चों का साहस और आत्मविश्वास बढ़ता है। वे भय को पीछे छोड़कर अधिक निर्भीकता और उत्साह से फिर पतंग उड़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रतिक्रिया का उत्तर देते समय भय का अनुमान न लगाएँ; अंश के 'और भी निडर' शब्दों को आधार बनाएँ।

8(ग). पैरों को बेचैन क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शरीर की चंचल गति बालमन की उमंग और आकांक्षा का संकेत बन सकती है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: बेचैनी का कारण पतंग उड़ाते समय बच्चे इतने उत्साहित और तल्लीन हैं कि उनके पैर एक जगह टिक नहीं पाते। वे पतंग की दिशा और गति के साथ छत पर इधर-उधर दौड़ना चाहते हैं। ऊँची उड़ान की इच्छा और खेल का आकर्षण उन्हें लगातार सक्रिय बनाए रखते हैं। इसी चंचलता के कारण पैरों को बेचैन कहा गया है।

चरण 2: बिंब का प्रभाव यह बेचैनी किसी दुःख या चिंता की नहीं, बल्कि उमंग और गति की है। बच्चों के उत्साह के सामने धरती भी तेज घूमकर उनके पैरों के पास आती हुई प्रतीत होती है। पैरों की चंचलता के माध्यम से कवि पूरे बालमन की अधीर ऊर्जा और खेल में उसकी पूर्ण संलग्नता को मूर्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पतंग उड़ाने की तीव्र उमंग और निरंतर दौड़ने-कूदने की इच्छा के कारण बच्चों के पैर स्थिर नहीं रहते; इसलिए उन्हें बेचैन कहा गया है।

त्वरित सुझाव: बेचैनी को चिंता न समझें; यहाँ पतंग उड़ाने के आनंद से उत्पन्न शारीरिक चंचलता बतानी है।

8(घ). "पतंगों के सहारे वे भी उड़ रहे हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में मन की अनुभूति को वास्तविक दृश्य के रूप में प्रस्तुत करके तन्मयता दिखाई जाती है।
- उत्तर का आधार दिए गए काव्यांश की शब्दावली, प्रसंग और उसमें व्यक्त भाव-संबंध है।

चरण 1: कथन का आशय पतंगों के सहारे बच्चों के भी उड़ने का आशय यह है कि वे पतंग उड़ाने में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि मन से स्वयं को आकाश में उड़ता हुआ अनुभव करते हैं। उनके शरीर धरती अथवा छत पर रहते हैं, पर उनकी कल्पना और आकांक्षाएँ पतंगों के साथ ऊपर उठती जाती हैं।

चरण 2: बालमन का चित्रण आकाश में पतंगों की स्वतंत्र गति बच्चों को बंधनमुक्त आनंद देती है। वे पतंग की हर हरकत के साथ अपने मन को जुड़ा हुआ पाते हैं और आसपास के खतरों तक को भूल जाते हैं। इस प्रकार उड़ान का बिंब उनकी अपार उमंग, स्वच्छंद कल्पना और खेल में पूरी तन्मयता को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चे शारीरिक रूप से नहीं, अपनी कल्पना, उमंग और इच्छाओं के माध्यम से पतंगों के साथ उड़ते हैं। यह उनके आनंद और गहरी तन्मयता का चित्र है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति का आशय बताते समय वास्तविक उड़ान और बच्चों की कल्पनात्मक अनुभूति का अंतर साफ रखें।

---

9. प्रभु प्रताप सुनि कान
विकल भए वानर निकर
आइ गयउ हनुमान
जिमि करुना महँ वीर रस । [6 अंक]

9(क). भाषा प्रयोग की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की भाषा का मूल्यांकन शब्दावली और अभिव्यक्ति के आधार पर किया जाता है।
- लोकभाषा के शब्द और संक्षिप्त वाक्य पात्रों के भावों को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: अवधी भाषा के रूप पहचानिए इस काव्यांश की पहली भाषिक विशेषता अवधी का सहज और स्वाभाविक प्रयोग है। “भए”, “गयउ”, “जिमि” तथा “महँ” जैसे शब्द अवधी के परिचित रूप हैं। इनके कारण कथन लोकजीवन के निकट और सरल बनता है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों के साथ इन देशज रूपों का मेल भाषा को प्रवाह देता है।

चरण 2: भावानुकूल अभिव्यक्ति स्पष्ट कीजिए दूसरी विशेषता भाषा की संक्षिप्तता और भावानुकूलता है। “विकल भए वानर निकर” थोड़े शब्दों में पूरे वानर समुदाय की व्याकुलता सामने रखता है। इसके बाद हनुमान का आगमन वातावरण में उत्साह भरता है। छोटी, लयात्मक पंक्तियाँ करुणा से वीरता की ओर बदलते भाव को प्रभावशाली बनाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अवधी के लोकप्रचलित रूपों का प्रयोग तथा संक्षिप्त, लयात्मक और भावानुकूल अभिव्यक्ति इसकी दो प्रमुख भाषिक विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता बताते समय “भए” और “जिमि” जैसे पाठ के शब्द उदाहरण में अवश्य दीजिए।

9(ख). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कथ्य, पात्रों की मनोदशा और रसात्मक प्रभाव स्पष्ट किया जाता है।
- इस अंश में वानरों की व्याकुलता और हनुमान के आगमन का विरोधी भाव प्रभाव उत्पन्न करता है।

चरण 1: व्याकुलता का भाव समझिए प्रस्तुत काव्यांश वानर समूह की गहरी व्याकुलता का चित्र प्रस्तुत करता है। “विकल भए वानर

निकर" में किसी एक पात्र का नहीं, पूरे समुदाय का दुख व्यक्त हुआ है। इससे प्रभु के प्रति वानरों का लगाव और संकट के समय उनकी संवेदनशीलता सामने आती है। वातावरण करुणा से भर उठा है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव बताइए ऐसे करुण वातावरण में हनुमान का आना आशा और शक्ति का संचार करता है। कवि उनके आगमन को करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने जैसा बताता है। दुख से दबे मन में साहस जागता है और निराशा के बीच संकट से उबरने की संभावना दिखाई देती है। सामूहिक दुख और वीरतापूर्ण आश्वासन का यह मेल अंश को मार्मिक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य व्याकुल वानर समुदाय की करुण दशा और हनुमान के आगमन से उत्पन्न आशा, साहस तथा वीरभाव के सजीव मेल में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में पहले वानरों की व्याकुलता और फिर हनुमान से जागते वीरभाव को जोड़िए।

9(ग). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान उसके शब्दगत या अर्थगत आधार से की जाती है।
- उपमा में उपमेय और उपमान के बीच समानता सूचक शब्द के द्वारा साम्य स्थापित होता है।

चरण 1: मुख्य अर्थालंकार पहचानिए "आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस" में उपमा अलंकार है। हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस में वीर रस के प्रकट होने से की गई है। यहाँ हनुमान का आगमन उपमेय, करुणा में वीर रस का उदय उपमान और "जिमि" उपमावाचक शब्द है। दोनों में दुख के बीच उत्साह तथा शक्ति जगाने की समानता है।

चरण 2: शब्द-सौंदर्य का आधार दीजिए "विकल भए वानर निकर" में "विकल" और "वानर" के आरंभ में व वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य उत्पन्न करती है। यह ध्वनिसाम्य पंक्ति को लय और श्रुतिमधुरता देता है। उपमा भावों के परिवर्तन को साकार करती है और अनुप्रास शब्दों के प्रवाह को आकर्षक बनाता है; दोनों का प्रयोग कथ्य को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंश में "जिमि करुना महँ वीर रस" की उपमा प्रमुख है; "विकल" और "वानर" में व वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: अलंकार का केवल नाम न लिखें; उपमा में "जिमि" और अनुप्रास में आवृत्त वर्ण का प्रमाण दें।

अथवा

9. अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन
सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से, सदा छलकता नीर
रोक शोक में भी हँसता है, शैशव का सुकुमार शरीर । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की दो भाषिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक विशेषता में भाषा का रूप, शब्दचयन और अभिव्यक्ति की शैली आती है।
- कविता में ठोस बिंब सामाजिक अर्थों के वाहक बन सकते हैं।

चरण 1: शब्दावली की विशेषता बताइए इस काव्यांश में संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। "अट्टालिका", "विप्लव",

"प्लावन", "क्षुद्र", "प्रफुल्ल" और "शैशव" जैसे तत्सम शब्द कथन को गंभीरता तथा ओज देते हैं। साथ ही "रे" जैसा संबोधन भाषा को आत्मीय, सीधा और आवेगपूर्ण बनाता है। शब्दों का चयन विषय की तीव्रता के अनुरूप है।

चरण 2: प्रतीकात्मक शैली स्पष्ट कीजिए दूसरी विशेषता प्रतीकात्मक और बिंबात्मक अभिव्यक्ति है। अट्टालिका संपन्न वर्ग के वैभव और आतंक का संकेत बनती है, जबकि पंक, छोटे जलज और शिशु का चित्र छोटे तथा वंचित जीवन की सहजता उभारता है। कवि लंबे विवरण के स्थान पर इन दृश्य बिंबों से सामाजिक विषमता और जीवन के उत्साह को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृतनिष्ठ, ओजपूर्ण खड़ी बोली तथा सामाजिक अर्थों से युक्त प्रतीकात्मक-बिंबात्मक अभिव्यक्ति काव्यांश की दो प्रमुख भाषिक विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा के उत्तर में तत्सम शब्दों के उदाहरण और प्रतीकों का संकेत दोनों अलग-अलग लिखिए।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है।
- अनुप्रास में किसी वर्ण की आवृत्ति से ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है।

चरण 1: रूपक की पहचान कीजिए "अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन" में अट्टालिका को सीधे आतंक का भवन कहा गया है। यहाँ ऊँचे भवन केवल निवास के स्थान नहीं रहते, बल्कि भय पैदा करने वाली संपन्न व्यवस्था के मूर्त रूप बन जाते हैं। इस सीधे आरोप में रूपक का प्रभाव है। यह अलंकार संपन्न वर्ग के प्रति कवि की आलोचनात्मक दृष्टि को तीखा बनाता है।

चरण 2: अनुप्रास के उदाहरण दीजिए "पंक", "पर", "विप्लव", "प्लावन" में प वर्ण की आवृत्ति तथा "शैशव" और "शरीर" में श वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य उत्पन्न करती है। शब्दों की यह ध्वन्यात्मक संगति कविता में प्रवाह और लय भरती है। विशेष रूप से विप्लव-प्लावन की ध्वनियाँ उमड़ती हुई शक्ति का प्रभाव बढ़ाती हैं, जबकि अंतिम पंक्ति का शब्दविन्यास शिशु की कोमलता उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष अट्टालिका को "आतंक भवन" कहने में रूपक तथा प और श वर्णों की आवृत्ति में अनुप्रास है; इनसे सामाजिक व्यंग्य और ध्वनि-सौंदर्य प्रभावी होते हैं।

त्वरित सुझाव: रूपक के लिए सीधे आरोप को और अनुप्रास के लिए दोहराए गए वर्ण को पाठ से दिखाइए।

9(ग). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के सामाजिक संकेत और संवेदना का संबंध समझाया जाता है।
- बादल का विप्लवकारी रूप संपन्न तथा वंचित वर्ग पर भिन्न प्रभाव डालता है।

चरण 1: अट्टालिका के संकेत को समझिए कवि भव्य अट्टालिका को आतंक का भवन कहकर संपन्न वर्ग के वैभव पर प्रश्न उठाता है। ऊँचाई और बाहरी चमक के भीतर भय छिपा हुआ है। बादल से जुड़ी परिवर्तनकारी शक्ति ऐसे वैभव के लिए आशंका का कारण है। इसके विपरीत पंक और छोटे जलज का उल्लेख कवि का ध्यान साधारण तथा छोटे जीवन की ओर ले जाता है।

चरण 2: छोटे जीवन की सहजता स्पष्ट कीजिए छोटा कमल जल पाकर खिलता है और शिशु शोक के बीच भी हँस सकता है। ये चित्र बताते हैं कि वंचित और छोटे जीवन में भी उल्लास, कोमलता तथा जीने की सहज शक्ति विद्यमान है। कवि का स्नेह इसी सरल जीवन के साथ है। भयग्रस्त वैभव और कठिनाइयों में भी हँसते जीवन का विरोध अंश के भाव को प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश संपन्न वर्ग के भय और छोटे, सहज जीवन के उल्लास का अंतर दिखाता है। इसकी सुंदरता वंचित जीवन के प्रति सहानुभूति तथा परिवर्तन में निहित नवजीवन की आशा में है।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका का भय और जलज तथा शिशु का उल्लास साथ रखकर कविता का सामाजिक भाव स्पष्ट करें।

10(क). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन के गीत में ढलता दिन समय के तीव्र प्रवाह का प्रतीक है।
- प्रियजन का आकर्षण जीवन में उत्साह भरता है; उसके अभाव में मन अकेलेपन से भर जाता है।

चरण 1: पथिक और पक्षियों की गति समझाइए "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" में कवि दिन के ढलने के माध्यम से समय की निरंतर गति का बोध कराता है। संध्या निकट देखकर पथिक जल्दी घर पहुँचना चाहता है। पक्षी भी अपने नीड़ों की ओर उड़ते हैं क्योंकि उनके बच्चे प्रतीक्षा कर रहे हैं। बच्चों की आशा और मिलने की आकुलता पक्षियों के पंखों में तेजी भर देती है। यहाँ घर केवल विश्राम का स्थान नहीं, अपनत्व और संबंधों का केंद्र है।

चरण 2: कवि के अकेलेपन का अर्थ बताइए पक्षियों के विपरीत कवि सोचता है कि उसके लिए कौन व्याकुल हो रहा है और वह किससे मिलने के लिए जल्दी करे। स्वागत करने वाले प्रियजन के अभाव का विचार उसके कदमों को शिथिल कर देता है। दूसरों की उत्सुक गति देखकर उसका अकेलापन और स्पष्ट होता है। यही अनुभव उसके हृदय में विह्वलता भरता है। कविता मानवीय संबंधों की उस आवश्यकता को सामने लाती है जो जीवन को दिशा और गति देती है।

चरण 3: प्रतिपाद्य को समेकित कीजिए गीत का केंद्रीय भाव यह है कि प्रियजन से मिलने की आशा मनुष्य को उत्साह और सक्रियता देती है, जबकि आत्मीय संबंधों का अभाव उसे उदास और निरुत्साहित करता है। बार-बार आता ढलते दिन का बोध जीवन की सीमित अवधि और बीतते अवसरों का भी संकेत है। प्रकृति के दैनिक दृश्य और कवि की निजी संवेदना के मेल से समय, प्रेम, प्रतीक्षा और अकेलेपन का मार्मिक चित्र बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का प्रतिपाद्य समय की तीव्र गति के बीच आत्मीय संबंधों की महत्ता है। मिलन की आशा जीवन में गति भरती है, जबकि प्रियजन की प्रतीक्षा से वंचित कवि अकेलेपन और उदासी का अनुभव करता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिपाद्य लिखते समय पक्षियों की उत्सुकता और कवि की शिथिलता का कारण जोड़कर बताइए।

10(ख). कविता को बच्चों के समान क्यों कहा गया है ? तर्कसम्मत उत्तर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता और बच्चे दोनों कल्पना, सहजता तथा भेदभाव से मुक्त आत्मीयता का विस्तार करते हैं।
- काव्य की उड़ान किसी स्थान या व्यक्ति की संकीर्ण सीमा में बँधती नहीं है।

चरण 1: बच्चों की सहज दुनिया समझें बच्चे खेलते समय अपने और पराए घर का अंतर नहीं करते। वे जाति, वर्ग, ऊँच-नीच या सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर साथी नहीं चुनते। उनके खेल में सभी शामिल हो सकते हैं। इसी सहज मिलनशीलता को कवि ने कविता के स्वभाव से जोड़ा है।

चरण 2: कविता से समानता स्पष्ट करें कविता भी किसी एक घर, समुदाय या देश तक सीमित नहीं रहती। उसकी संवेदना सबको अपना बनाती है और पाठक को अपने छोटे दायरे से बाहर ले जाती है। बच्चे जैसे खेल में नया संसार रचते हैं, वैसे ही कविता कल्पना और भाषा से नए अनुभवों का संसार बनाती है। बच्चों का खेल और कविता का सृजन आनंद से जुड़ा है; दोनों की संभावनाएँ किसी तय सीमा पर

समाप्त नहीं होतीं। बच्चों के बहाने कविता की बात करते हुए कवि उस संसार की कल्पना करता है जहाँ संबंधों पर स्वार्थ का नियंत्रण नहीं है। कविता मनुष्य को दूसरे की खुशी और दुख से जोड़ती है। इस प्रकार बच्चों जैसी निष्कपट दृष्टि कविता के भीतर व्यापक मानवीय एकता का आधार बनती है। यहाँ समानता आयु या आकार की नहीं, स्वभाव और असीम विस्तार की है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता को बच्चों के समान इसलिए कहा गया है कि दोनों सहज, कल्पनाशील, आनंदमय और भेदभाव से मुक्त हैं। वे अपने-पराए की सीमाएँ मिटाकर सबको जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चों की विशेषताओं को केवल गिनाएँ नहीं; हर विशेषता का कविता के स्वभाव से संबंध भी स्पष्ट करें।

10(ग). 'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अट्टालिकाएँ संपन्न शोषक वर्ग के वैभव तथा जनजीवन से उसके अलगाव की प्रतीक हैं।
- कविता में बादल की गर्जना क्रांति और दबे हुए लोगों की जागृति का संकेत देती है।

चरण 1: अट्टालिकाओं का प्रतीकात्मक अर्थ पहचानें विशाल अट्टालिकाओं में रहने वाला धनी वर्ग साधन-संपन्न है, किंतु उसका वैभव निर्धन और श्रमिक जनता के शोषण पर टिका है। इस व्यवस्था में सामान्य मनुष्य को सुरक्षा और सम्मान के स्थान पर अभाव, दबाव और भय मिलता है। इसलिए ये भवन केवल सुंदर निवास नहीं, शोषणकारी सत्ता के प्रतीक बन जाते हैं।

चरण 2: आतंक और क्रांति का संबंध समझें इन भवनों में रहने वाले लोग अपना धन और प्रभुत्व खोने से डरते हैं। बादल की प्रचंड गर्जना उन्हें ऐसी क्रांति का आभास देती है जो शोषण पर आधारित व्यवस्था को हिला सकती है। अतः बाहर से वैभवशाली ये भवन भीतर आशंका और भय से भरे हैं। इसके विपरीत छोटे पौधे तथा पीड़ित किसान बादल से नई आशा पाते हैं। यह विरोध धनी वर्ग के आतंक को और स्पष्ट करता है। धनवानों के लिए गर्जना संकट की सूचना है, जबकि अभावग्रस्त लोगों के लिए वही स्वर परिवर्तन का स्वागत बन जाता है। इसीलिए कविता में अट्टालिका का उल्लेख सामाजिक विषमता और उससे उपजे भय के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अट्टालिकाओं को आतंक भवन इसलिए कहा गया है कि वे जनता को भयभीत करने वाली शोषक व्यवस्था की प्रतीक हैं और उनमें रहने वाला संपन्न वर्ग स्वयं भी क्रांति से अपना वैभव नष्ट होने की आशंका में आतंकित है।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका के बाहरी वैभव के साथ शोषक की भीतरी असुरक्षा और बादल की क्रांतिकारी भूमिका जोड़कर उत्तर दें।

11. लोभ का यह जीतना नहीं कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार । आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बन्द हो जाएगा ? क्या आँख बन्द करके ही हम सपने नहीं लेते हैं ? और वे सपने क्या चैन-भंग नहीं करते हैं ? इससे मन को बन्द कर डालने की कोशिश तो अच्छी नहीं । वह अकारथ है यह तो हठवाला योग है । शायद हठ-ही-हठ है, योग नहीं है । इससे मन कृश भले ही हो जाए और पीला और अशक्त; जैसे विद्वान का ज्ञान । वह मुक्त ऐसे नहीं होता । इससे वह व्यापक की जगह संकीर्ण और विराट की जगह क्षुद्र होता है । इसलिए उसका रोम-रोम मूँदकर बन्द तो मन को करना नहीं चाहिए । [8 अंक]

11(क). 'लोभ को नकारना लोभ की ही जीत है' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोभ का मूल मन में है; बाहरी निषेध मात्र से उसका नाश नहीं होता।
- दमन और वास्तविक आत्मसंयम में अंतर समझना इस अंश का मुख्य बिंदु है।

चरण 1: नकार का अर्थ समझें लोभ को नकारने का अर्थ यहाँ उसकी उपस्थिति स्वीकारने के बजाय उसे दबाना और मन को विषयों से

जबरन बंद करना है। मन में इच्छा बनी रहती है, भले ही व्यक्ति वस्तु को देखने या पाने से अपने को रोक ले।

चरण 2: लोभ की जीत स्पष्ट करें यदि लोभ के डर से व्यक्ति अपनी सहज दृष्टि और मन की स्वतंत्रता ही खो दे, तो उसके जीवन को अब भी लोभ नियंत्रित कर रहा है। इच्छाएँ स्वप्न में भी उसे बेचैन कर सकती हैं। इसलिए बाहरी रोक व्यक्ति की मुक्ति नहीं, उसकी पराजय है। इस नकार में व्यक्ति लोभ का समाधान नहीं करता, बल्कि उससे बचने के लिए अपने ही मन की क्षमताएँ सीमित कर लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोभ का केवल निषेध करने पर वह मन में बना रहता है और व्यक्ति को भय तथा दमन के अधीन कर देता है। इसीलिए लेखक इसे लोभ की जीत और मनुष्य की हार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: अंश में मन और स्वप्न के संकेतों को जोड़कर बताएँ कि बाहरी रोक इच्छा के मूल को समाप्त नहीं करती।

11(ख). आँख फोड़ने का दृष्टांत क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृष्टांत किसी अमूर्त विचार को प्रत्यक्ष उदाहरण से स्पष्ट करता है।
- आँख दृष्टि का साधन है, जबकि लोभ का निवास मन में है।

चरण 1: दृष्टांत का प्रसंग बताएँ लेखक ने आँख फोड़ने का उदाहरण लोभ से बचने के लिए इंद्रियों को निष्क्रिय कर देने की निरर्थकता बताने के लिए दिया है। आकर्षक वस्तु न दिखाई दे, इससे मन में बसी इच्छा अपने आप समाप्त नहीं हो जाती।

चरण 2: उदाहरण का तर्क समझाएँ बंद आँखों से भी मनुष्य सपने देखता है और उन सपनों के आकर्षण से उसका चैन भंग हो सकता है। इसी तरह आँख न रहने पर भी मन में रूप की कल्पना बनी रह सकती है। दोष देखने की क्षमता में नहीं, मन के लोभ में है; अतः उपचार मन की समझ में चाहिए। लेखक का प्रश्न है कि आँख बंद होने पर भी स्वप्न आते हैं; यही बात बाहरी निषेध की सीमा को उजागर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष आँख फोड़ने का दृष्टांत यह सिद्ध करता है कि इंद्रियों का दमन लोभ से मुक्ति का उपाय नहीं है। मन की आसक्ति बनी हो तो बाहरी साधन नष्ट करने पर भी इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं।

त्वरित सुझाव: दृष्टांत का उत्तर देते समय उदाहरण दोहराने के बाद उसका निष्कर्ष भी लिखें: लोभ मन का विषय है।

11(ग). 'शायद हठ ही है, योग नहीं है' – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जबरन मन को बंद करना हठ है; इससे मन का वास्तविक विस्तार या मुक्ति नहीं होती।
- अंश में हठ और योग का अंतर उनके मन पर पड़ने वाले प्रभाव से बताया गया है।

चरण 1: हठ का आशय बताएँ लेखक उस कोशिश को हठ कहते हैं जिसमें मनुष्य इच्छाओं से बचने के लिए मन के सारे द्वार जबरन बंद कर देता है। इसमें विवेकपूर्ण समझ के स्थान पर कठोर दमन और ज़िद प्रधान होते हैं।

चरण 2: योग से अंतर स्पष्ट करें इस दमन से मन कृश, अशक्त और संकीर्ण हो सकता है, पर लोभ से मुक्त नहीं होता। लेखक के अनुसार ऐसा अभ्यास मन को व्यापक और विराट बनाने के बदले क्षुद्र बनाता है। इसलिए केवल अपने को पीड़ित या निष्क्रिय कर लेना योग की उपलब्धि नहीं माना जा सकता। योग का मूल्य केवल कठोरता से नहीं, मन को मिलने वाली स्वतंत्रता और विस्तार से आँका जाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि मन को जबरन दबाना केवल ज़िदपूर्ण दमन है। जो साधना मन को स्वतंत्र और व्यापक बनाने

के बजाय दुर्बल तथा संकीर्ण कर दे, उसे वास्तविक योग नहीं कहा जा सकता।

त्वरित सुझाव: हठ का अर्थ केवल कठिन अभ्यास न लिखें; यहाँ उसका अर्थ मन का निष्फल और जबरन दमन है।

11(घ). मुक्त होने के लिए लेखक के अनुसार आवश्यक शर्त क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्ति के लिए मन का खुलापन और विस्तार आवश्यक है।
- लेखक मन के दमन को मुक्ति के विपरीत मानते हैं।

चरण 1: अंश की चेतावनी पहचानें लेखक कहते हैं कि मन का रोम-रोम मूँदकर उसे बंद नहीं करना चाहिए। ऐसा करने पर वह व्यापक के स्थान पर संकीर्ण और विराट के स्थान पर क्षुद्र बनता है। यह स्थिति मुक्ति नहीं है।

चरण 2: आवश्यक शर्त स्पष्ट करें मुक्ति के लिए मन को खुला, समर्थ और व्यापक रखना आवश्यक है। आकर्षणों के भय से उसकी संवेदना और ग्रहणशीलता को कुचलना उचित नहीं। लोभ का सामना समझ के साथ होना चाहिए; केवल इच्छाओं को दबाकर मन को अशक्त बना देना पर्याप्त नहीं है। अंश में कृश, पीला और अशक्त मन दमन का परिणाम है। इसके विपरीत व्यापक और विराट मन की स्थिति को स्वीकार करना ही लेखक के तर्क का सकारात्मक पक्ष है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार मुक्त होने की आवश्यक शर्त है कि मन को जबरन बंद न किया जाए, बल्कि उसे खुला और व्यापक रखा जाए। मन का संकुचन तथा दमन मुक्ति के मार्ग नहीं हैं।

त्वरित सुझाव: अंश के व्यापक, विराट और संकीर्ण शब्दों के आधार पर मुक्ति की शर्त लिखें; असंबद्ध उपदेश न जोड़ें।

अथवा

11. प्लेटफार्म पर उसके बहुत से दोस्त, भाई, रिश्तेदार थे, हसरत भरी नज़रों, बहते हुए आँसुओं, ठंडी साँसों और भिंचे हुए होठों को बीच में से काटती हुई रेल सरहद की तरफ बढ़ी । अटारी में पाकिस्तानी पुलिस उतरी, हिन्दुस्तानी पुलिस सवार हुई । कुछ समझ में नहीं आता था कि कहाँ से लाहौर खत्म हुआ और किस जगह से अमृतसर शुरू हो गया । एक ज़मीन थी, एक ज़बान थी, एक-सी सूरतें और लिबास, एक-सा लबो लहज़ा, और अंदाज थे, गालियाँ भी एक ही सी थीं जिनसे दोनों बड़े प्यार से एक दूसरे को नवाज़ रहे थे । बस मुश्किल सिर्फ़ इतनी थी कि भरी हुई बन्दूकें दोनों के हाथों में थीं । [8 अंक]

11(क). क्यों पता नहीं लगता कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और कहाँ अमृतसर शुरू हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लाहौर और अमृतसर की समानताओं को पहचानना इस प्रश्न का आधार है।
- राजनीतिक सीमा बदलने पर भी लोगों की भाषा, वेशभूषा और व्यवहार की समानता बनी रहती है।

चरण 1: समानताओं का आधार लाहौर और अमृतसर के बीच भूमि का स्वरूप एक जैसा था। दोनों ओर के लोगों की सूरतें, पहनावा, बोली, बोलने का लहजा और तौर-तरीके भी समान थे। इसलिए यात्रा में ऐसा कोई स्वाभाविक बदलाव दिखाई नहीं देता था जिससे दोनों स्थानों के बीच स्पष्ट भेद किया जा सके।

चरण 2: सीमा और जीवन का अंतर गद्यांश में यहाँ तक कहा गया है कि दोनों ओर की गालियाँ भी एक जैसी थीं और लोग उन्हें आत्मीय ढंग से बोल रहे थे। यह विवरण उनकी साझी संस्कृति को सामने लाता है। पुलिस का बदलना प्रशासनिक सीमा का संकेत था, किंतु जनजीवन की समानता के कारण समझना कठिन था कि लाहौर कहाँ समाप्त हुआ और अमृतसर कहाँ आरंभ हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों ओर एक जैसी भूमि, भाषा, वेशभूषा, सूरतें और व्यवहार थे; इसलिए लाहौर की समाप्ति और अमृतसर के आरंभ का स्वाभाविक अंतर दिखाई नहीं देता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गद्यांश से भाषा, पहनावे और व्यवहार की समानता के स्पष्ट उदाहरण चुनें।

11(ख). प्लेटफार्म पर खड़े लोगों की दशा कैसी थी, और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लोगों की मन:स्थिति उनके चेहरे, आँखों और शारीरिक प्रतिक्रियाओं से व्यक्त होती है।
- विदाई के दृश्य का कारण संबंधियों और मित्रों से बिछुड़ना है।

चरण 1: दशा के संकेत प्लेटफार्म पर उपस्थित दोस्तों, भाइयों और रिश्तेदारों की आँखों में आँसू थे। उनकी निगाहें हसरत से भरी थीं, वे ठंडी साँसें भर रहे थे और उनके होंठ भिंचे हुए थे। ये सभी संकेत बताते हैं कि वे अत्यंत उदास और व्यथित थे। भिंचे होंठ उनके भीतर दबे हुए दुख और भावनाओं पर नियंत्रण रखने की कोशिश को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: पीड़ा का कारण वे अपनी प्रिय परिचिता को विदा कर रहे थे। रेल उसके अपनों को पीछे छोड़ते हुए सरहद की ओर बढ़ रही थी। मिलने के बाद फिर अलग होने की विवशता ने सबको दुखी कर दिया था। गद्यांश में रेल का आँसुओं और हसरत भरी नज़रों को काटते हुए बढ़ना इसी मार्मिक बिछोह को उभारता है। उत्तर का आधार यही विदाई का प्रसंग है।

चरण 3: निष्कर्ष प्लेटफार्म पर खड़े लोग आँसू भरी आँखों, ठंडी साँसों और भिंचे होंठों के साथ दुखी थे, क्योंकि अपनी आत्मीय परिचिता से बिछुड़ने का समय आ गया था।

त्वरित सुझाव: दशा और कारण दोनों लिखें: पहले आँसू तथा ठंडी साँसें, फिर आत्मीय व्यक्ति से विदाई का दुख।

11(ग). पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की पुलिस कहाँ बदली और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में गद्यांश से स्थान और पुलिस बदलने का कारण स्पष्ट करना है।
- देशों की राजनीतिक सीमा उनके पुलिस प्रशासन का अधिकार-क्षेत्र भी अलग करती है।

चरण 1: स्थान की पहचान पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी पुलिस अटारी में बदली। गद्यांश में स्पष्ट है कि अटारी पहुँचने पर पाकिस्तानी पुलिस रेल से उतर गई और हिन्दुस्तानी पुलिस उसमें सवार हो गई। अत: उत्तर में केवल किसी सामान्य सीमा-स्थान का उल्लेख करने के स्थान पर अटारी का नाम देना आवश्यक है।

चरण 2: परिवर्तन का कारण रेल पाकिस्तान की ओर से भारत की सीमा में प्रवेश कर रही थी। इसलिए उसकी सुरक्षा और निगरानी की जिम्मेदारी अब हिन्दुस्तानी पुलिस को सँभालनी थी। पाकिस्तानी पुलिस का अधिकार-क्षेत्र पीछे छूट गया था। लोगों की भाषा और जीवन में समानता होने पर भी दोनों देशों की राजनीतिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था अलग थी; पुलिस का बदलना उसी अलग व्यवस्था का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष पुलिस अटारी में बदली, क्योंकि रेल भारत में प्रवेश कर रही थी; इसलिए सुरक्षा और निगरानी का दायित्व पाकिस्तानी पुलिस से हिन्दुस्तानी पुलिस को मिला।

त्वरित सुझाव: कहाँ और क्यों के उत्तर अलग पहचानें: अटारी स्थान है और देश की सीमा बदलना कारण।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मुश्किल सिर्फ इतनी थी कि भरी हुई बंदूकें दोनों के हाथों में थीं ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन में भरी हुई बंदूकें शत्रुता, भय और राजनीतिक तनाव का संकेत हैं।
- आशय समझाने के लिए लोगों की समानता और सीमा की सशस्त्र व्यवस्था को साथ देखना चाहिए।

चरण 1: कथन का संदर्भ गद्यांश में भारत और पाकिस्तान के लोगों की जमीन, भाषा, वेशभूषा तथा व्यवहार की समानता बताई गई है। वे आत्मीय ढंग से एक-दूसरे से बोलते हैं। इन समानताओं से प्रतीत होता है कि दोनों ओर के लोग सांस्कृतिक रूप से अलग नहीं हैं और उनमें आपसी अपनापन बना हुआ है।

चरण 2: बंदूकों का निहितार्थ इसके बावजूद दोनों देशों की पुलिस के हाथों में भरी हुई बंदूकें थीं। ये बंदूकें विभाजन के बाद पैदा हुए संदेह, सुरक्षा संबंधी तनाव और टकराव की संभावना का प्रतीक हैं। राजनीतिक सीमा तथा शत्रुता की भावना लोगों की सहज आत्मीयता में बाधा डाल रही थी। लेखिका की पीड़ा यह है कि इतनी समानता और अपनापन होते हुए भी दोनों पक्ष एक-दूसरे के सामने हथियारबंद खड़े थे।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि साझी संस्कृति और आत्मीय संबंधों के बावजूद राजनीतिक विभाजन ने दोनों पक्षों के बीच अविश्वास तथा सशस्त्र तनाव पैदा कर दिया था।

त्वरित सुझाव: भरी बंदूकों का केवल शाब्दिक अर्थ न दें; उन्हें अविश्वास से जोड़कर साझी संस्कृति की पृष्ठभूमि में समझाएँ।

12(क). पहलवान की ढोलक साधनहीन गाँव वालों के प्रति क्या भूमिका निभाती थी ? कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक की ध्वनि संघर्ष और जीवन-शक्ति का प्रतीक है।
- महामारी से त्रस्त ग्रामीणों के लिए मानसिक सहारा भी जीवन बचाए रखने की प्रेरणा बनता है।

चरण 1: गाँव की परिस्थितियाँ गाँव में महामारी ने भय, निराशा और मृत्यु का वातावरण पैदा कर दिया था। साधनहीन ग्रामीणों के पास बीमारी से बचाव और उपचार के पर्याप्त साधन नहीं थे। रात का सन्नाटा, रोगियों की पीड़ा और मृत्यु की आशंका उनका मनोबल तोड़ रही थी। ऐसे समय पहलवान की ढोलक की आवाज पूरे गाँव में सुनाई देती थी और भयपूर्ण निस्तब्धता को तोड़ती थी।

चरण 2: ढोलक का प्रभाव ढोलक की ताल ग्रामीणों में साहस और जीवन से जूझने की शक्ति भरती थी। उसका स्वर उन्हें यह अनुभव कराता था कि मृत्यु और संकट के सामने हार मानने के स्थान पर संघर्ष करना चाहिए। जैसे कुश्ती में ढोलक पहलवान को दाँव लगाने की प्रेरणा देती थी, वैसे ही उसकी ध्वनि गाँववालों को अपने दुख और डर का सामना करने का मानसिक बल देती थी।

चरण 3: भूमिका का मूल्यांकन ढोलक रोग का इलाज या भोजन का साधन नहीं थी, फिर भी वह निराश लोगों के लिए संबल थी। रात में उसकी आवाज सुनकर उन्हें अकेलेपन से राहत मिलती और जीवन की आशा बनी रहती थी। इस प्रकार ढोलक साधनहीन गाँववालों के प्रति उत्साहवर्धक साथी की भूमिका निभाती थी। उसकी निरंतर ध्वनि कहानी में विपरीत परिस्थितियों के बीच जीवित रहने की जिजीविषा को मूर्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक महामारी से भयभीत, साधनहीन गाँववालों को साहस, आशा और संघर्ष की प्रेरणा देती थी। उसकी ताल मृत्यु के सन्नाटे को तोड़कर उनका मनोबल बनाए रखती थी।

त्वरित सुझाव: महामारी का वातावरण बताकर ढोलक की ताल को भय दूर करने और संघर्ष की शक्ति जगाने से जोड़ें।

12(ख). मेंढक मण्डली पर पानी डालने को लेकर लेखक और जीजी के विचारों में क्या भिन्नता थी ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के पाठ में लेखक का तर्कप्रधान दृष्टिकोण और जीजी की लोकपरंपरा में आस्था आमने-सामने हैं।
- दोनों के विचार पानी की कमी और उसके उपयोग को लेकर अलग हैं।

चरण 1: लेखक का दृष्टिकोण लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालने को पानी की बरबादी मानते थे। भीषण गरमी और सूखे के समय जब पीने के लिए पानी जुटाना कठिन था, तब इंदर सेना के लड़कों पर पानी उड़ेलना उन्हें अनुचित लगता था। वे इस विश्वास को स्वीकार नहीं करते थे कि ऐसा करने से इंद्र प्रसन्न होंगे और वर्षा होने लगेगी। उनका दृष्टिकोण तर्क पर आधारित था और वे इस प्रथा का विरोध करते थे।

चरण 2: जीजी का दृष्टिकोण जीजी की लोकविश्वास और परंपरा में आस्था थी। वे मेंढक मंडली पर पानी डालने को व्यर्थ खर्च नहीं, वर्षा के लिए किया गया त्याग और अर्पण मानती थीं। उनके अनुसार किसी बड़ी प्राप्ति के लिए पहले अपनी ओर से कुछ देना पड़ता है। वे इसे खेत में बीज डालने के उदाहरण से समझाती थीं: किसान अनाज को मिट्टी में डालता है, तभी आगे अधिक अन्न प्राप्त होता है।

चरण 3: विचारों की भिन्नता लेखक का ध्यान उपलब्ध पानी को बचाने पर था, जबकि जीजी थोड़े पानी के दान में भविष्य की वर्षा की आशा देखती थीं। लेखक के लिए यह अंधविश्वासपूर्ण अपव्यय था; जीजी के लिए श्रद्धा, त्याग और लोकहित का काम। इस अंतर में एक ओर तर्कशील युवा मन है और दूसरी ओर सामूहिक जीवन से जुड़ी लोकआस्था तथा त्याग की भावना है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक पानी डालने को सूखे में पानी की बरबादी और अंधविश्वास मानते थे; जीजी उसे वर्षा की आशा में किया गया त्याग मानती थीं, जैसे अच्छी फसल पाने के लिए बीज बोया जाता है।

त्वरित सुझाव: लेखक के पानी बचाने के तर्क के सामने जीजी का बीज बोने वाला उदाहरण रखकर विचारों का अंतर स्पष्ट करें।

12(ग). श्रम विभाजन पर डॉ. आंबेडकर के विचारों को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन सामाजिक जीवन और उत्पादन के संचालन का आवश्यक साधन है।
- जाति पर आधारित पेशागत बँटवारा व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता का निषेध करता है।

चरण 1: श्रम-विभाजन की उपयोगिता डॉ. आंबेडकर श्रम-विभाजन का विरोध नहीं करते। आधुनिक समाज में अलग-अलग कार्यों का बँटवारा आवश्यक है, क्योंकि इससे विविध काम व्यवस्थित ढंग से संपन्न होते हैं। उनका विरोध उस व्यवस्था से है जो जाति-प्रथा को उपयोगी श्रम-विभाजन बताकर उचित ठहराती है।

चरण 2: जाति-व्यवस्था की विकृति जाति-प्रथा केवल कामों का बँटवारा नहीं करती, बल्कि काम करने वाले लोगों को भी स्थायी श्रेणियों में बाँट देती है। इन श्रेणियों में ऊँच-नीच का भाव रहता है। व्यक्ति का पेशा उसकी रुचि, योग्यता या प्रशिक्षण के आधार पर नहीं, जन्म और माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होता है। इस कारण व्यक्तिगत क्षमता का पूरा विकास नहीं हो पाता।

चरण 3: स्वतंत्रता और दक्षता पर प्रभाव आंबेडकर के अनुसार मनुष्य को अपनी क्षमता के अनुरूप पेशा चुनने और आवश्यकता पड़ने पर बदलने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। जाति-प्रथा यह स्वतंत्रता रोकती है। उद्योग और परिस्थितियाँ बदलने पर भी पुराना पेशा छोड़ने की बाधा बेरोजगारी बढ़ा सकती है। थोपा गया काम व्यक्ति में अरुचि भी पैदा करता है, जिससे श्रम की दक्षता घटती है।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर उपयोगी श्रम-विभाजन के समर्थक हैं, किंतु जन्माधारित, ऊँच-नीच से ग्रस्त श्रमिक-विभाजन के विरोधी हैं। वे योग्यता, स्वतंत्र चुनाव और सामाजिक समानता को उचित आधार मानते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम का विभाजन और श्रमिकों का जन्माधारित विभाजन अलग करके समझाएँ; इसी अंतर से आंबेडकर का तर्क स्पष्ट होगा।

12(घ). चार्ली चैप्लिन अपने ऊपर सबसे अधिक कब हँसता था ? क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मव्यंग्य में कलाकार अपने ही व्यवहार और दंभ को हँसी का विषय बनाता है।
- चार्ली का हास्य मानवीय दुर्बलताओं को सामने लाकर दर्शक को स्वयं पर हँसना सिखाता है।

चरण 1: सबसे अधिक हँसने का अवसर चार्ली अपने ऊपर सबसे अधिक तब हँसता था जब वह अपने को बहुत सफल, सभ्य, सुसंस्कृत और संपन्न व्यक्ति की तरह प्रस्तुत करता था। जब वह आत्मविश्वास से भरा हुआ और दूसरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली या श्रेष्ठ दिखाई देता था, तभी वह अपनी ही इस छवि को हँसी का आधार बना देता था।

चरण 2: आत्मव्यंग्य का कारण ऐसे क्षणों में मनुष्य अपनी सीमाएँ भूलकर अपनी महत्ता का प्रदर्शन करने लगता है। चार्ली इसी अहंकार और दिखावटी बड़प्पन को उजागर करता है। वह अपने को अत्यंत कठोर या अत्यंत कोमल दिखाने वाले व्यवहार में छिपी अतिशयोक्ति को भी हास्यास्पद बना देता है। इससे बाहरी गरिमा और भीतर की साधारण मानवीय कमजोरी का अंतर उभरता है।

चरण 3: दर्शक पर प्रभाव चार्ली केवल दूसरों का उपहास करके स्वयं को ऊँचा नहीं दिखाता। वह स्वयं हास्य का पात्र बनकर यह बोध कराता है कि सफल और शक्तिशाली दिखने वाला व्यक्ति भी कमियों से मुक्त नहीं है। दर्शक उसके व्यवहार में अपना अहंकार पहचान सकता है। इस प्रकार अपने ऊपर हँसना आत्मपहचान, सहजता और मानवीय समानता की भावना पैदा करता है।

चरण 4: निष्कर्ष चार्ली का सबसे तीखा आत्मव्यंग्य अपनी श्रेष्ठता और सफलता से भरी छवि पर होता था, क्योंकि वह मनुष्य के दंभ और बनावटी बड़प्पन को तोड़कर उसके सहज मानवीय रूप को सामने लाना चाहता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले सफलता और श्रेष्ठता वाला अवसर बताएँ, फिर आत्मव्यंग्य द्वारा अहंकार तोड़ने का कारण समझाएँ।

12(ङ). बाज़ार दर्शन के आधार पर 'पैसे की व्यंग्य शक्ति' कथन को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण आवश्यकता से अधिक वस्तुओं की इच्छा जगाकर अभाव का बोध बढ़ा सकता है।
- संतोष और अपनी आवश्यकताओं की पहचान धन के प्रदर्शन से उत्पन्न हीनता को निष्प्रभावी करते हैं।

चरण 1: व्यंग्य-शक्ति का अर्थ पैसे की व्यंग्य-शक्ति से आशय धन और उससे मिलने वाली सुविधाओं के उस प्रभाव से है जो साधारण व्यक्ति को अपनी निर्धनता और असमर्थता का तीखा अनुभव कराता है। धनवान का वैभव और बाज़ार में सजी आकर्षक वस्तुएँ मानो उसकी सीमित क्रय-क्षमता पर कटाक्ष करती हैं। व्यक्ति को अपने जीवन की उपलब्धियाँ भी अपर्याप्त लगने लगती हैं।

चरण 2: मन और संबंधों पर प्रभाव विलास की वस्तुओं को देखकर जब व्यक्ति उनकी तुलना अपनी स्थिति से करता है, तब उसके भीतर असंतोष, ईर्ष्या और हीनता पैदा होती है। उसे लगता है कि उसके पास बहुत कुछ होना चाहिए था, जो नहीं है। यह अनुभूति इतनी तीखी हो सकती है कि वह अपने निकट संबंधियों के प्रति भी उपेक्षा या कृतघ्नता अनुभव करने लगता है। इस प्रकार धन की चमक मानसिक शांति और संबंधों को प्रभावित करती है।

चरण 3: भगतजी से मिलने वाला प्रतिपक्ष चूरन बेचने वाले भगतजी अपनी सीमित आवश्यकता और संतोष के कारण इस शक्ति से अप्रभावित रहते हैं। निश्चित कमाई हो जाने पर वे शेष चूरन बच्चों में बाँट देते हैं; अधिक लाभ की संभावना उन्हें बेचैन नहीं करती। उनकी तृप्ति पैसे से उपजी तुलना को निरर्थक कर देती है। उनके सामने धन न अभाव का अपमान जगा पाता है, न लोभ उत्पन्न कर पाता है।

चरण 4: निष्कर्ष पैसे की व्यंग्य-शक्ति मनुष्य को उसकी आर्थिक कमी चुभाकर असंतुष्ट बनाती है। भगतजी का संतोष दिखाता है कि आवश्यकताओं पर संयम रखने वाला व्यक्ति इसके प्रभाव से बच सकता है।

त्वरित सुझाव: केवल धन का घमंड न लिखें; आर्थिक तुलना से पैदा होने वाली हीनता और उसके सामने भगतजी के संतोष को जोड़ें।

13. 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर उन जीवन मूल्यों पर विचार कीजिए, जो यशोधर बाबू को किशनदा से उत्तराधिकार में मिले थे । आप उनमें से किन्हें अपनाना चाहेंगे ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किशनदा का प्रभाव यशोधर बाबू की सादगी, सामुदायिक भावना और नैतिक दृष्टि में दिखाई देता है।
- परंपरा से मिले मूल्यों का विवेकपूर्ण चयन वर्तमान जीवन को संवेदनशील और संतुलित बनाता है।

चरण 1: किशनदा का आदर्श और सादा जीवन किशनदा यशोधर बाबू के जीवन में मार्गदर्शक और अभिभावक जैसे थे। उनकी संगति में यशोधर बाबू ने कम साधनों में सरल जीवन बिताना, अनावश्यक दिखावे से बचना और आत्मसम्मान बनाए रखना सीखा। इसलिए नई पीढ़ी के भोगवादी आकर्षण तथा प्रतिष्ठा के प्रदर्शन से वे सहज रूप से सहमत नहीं हो पाते। उनके लिए जीवन का मूल्य केवल धन और आधुनिक सुविधाओं से तय नहीं होता।

चरण 2: परोपकार और सामुदायिक आत्मीयता किशनदा जरूरतमंद परिचितों और पहाड़ से आने वाले युवकों को सहारा देते थे। उनके यहाँ दूसरों के लिए स्थान और अपनापन था। इसी प्रभाव से यशोधर बाबू भी रिश्तेदारी, परिचय और समाज के प्रति जिम्मेदारी को महत्त्व देते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति केवल अपने परिवार की सुविधा तक सीमित न रहे, बल्कि दूसरों के सुख-दुख से भी जुड़े। यह मूल्य सामाजिक सहयोग को जीवित रखता है।

चरण 3: परंपरा, अनुशासन और नैतिकता किशनदा से मिली जीवन-दृष्टि में पुरानी परंपराओं के प्रति सम्मान, आचरण की मर्यादा, नियमितता और अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ाव शामिल हैं। यशोधर बाबू इन्हीं मान्यताओं की कसौटी पर नए व्यवहार को देखते हैं। आर्थिक उन्नति का आकर्षण उनके नैतिक निर्णय का एकमात्र आधार नहीं बनता। हालाँकि बदलती पीढ़ी से संवाद के अभाव में उनका परंपराप्रेम कई बार असमंजस और दूरी का कारण भी बनता है।

चरण 4: मैं जिन मूल्यों को अपनाना चाहूँगा मैं किशनदा की सादगी, निस्वार्थ सहयोग, आत्मसम्मान और सामुदायिक आत्मीयता को अपनाना चाहूँगा। सादगी अनावश्यक उपभोग से बचाएगी, सहयोग दूसरों की कठिनाइयों के प्रति संवेदनशील बनाएगा और आत्मसम्मान अनुचित लाभ से दूर रखेगा। साथ ही मैं नई पीढ़ी की उचित आकांक्षाओं को समझने और समयानुकूल परिवर्तन स्वीकार करने का प्रयास करूँगा। परंपरा का सम्मान तभी सार्थक है जब वह संबंधों में उदारता और संवाद बढ़ाए।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू को किशनदा से सादगी, सेवा, आत्मीयता, अनुशासन और नैतिक निष्ठा की विरासत मिली। मैं इन मानवीय गुणों को अपनाते हुए समय के साथ संवाद और विवेकपूर्ण परिवर्तन की क्षमता भी बनाए रखना चाहूँगा।

त्वरित सुझाव: पहले किशनदा से मिले मूल्यों को यशोधर बाबू के व्यवहार से जोड़ें, फिर अपनी पसंद और उसका कारण स्पष्ट करें।

14(क). मुअनजो दड़ो की सभ्यता पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी, कैसे ? पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' में मुअनजो-दड़ो के अवशेष विकसित नगर-जीवन, तकनीकी कुशलता और सुरुचिपूर्ण संस्कृति के प्रमाण हैं।
- सभ्यता के विकास का आकलन केवल विशाल इमारतों से नहीं, बल्कि स्वच्छता, नियोजन, सामाजिक जीवन और कला के प्रमाणों को एक साथ देखकर करना चाहिए।

चरण 1: सुनियोजित नगर और स्वच्छता की व्यवस्था मुअनजो-दड़ो में सड़कों तथा गलियों का व्यवस्थित जाल था। मकानों के निर्माण में पकी ईंटों का प्रयोग किया गया था। घरों में स्नानागार थे और गंदे पानी की निकासी के लिए नालियाँ बनी थीं। कुओं की उपलब्धता से जल-व्यवस्था का भी पता चलता है। घरों, गलियों और सार्वजनिक स्थानों के बीच ऐसा तालमेल आकस्मिक नहीं हो सकता; इसके पीछे नगर-निर्माण का ज्ञान और सामूहिक व्यवस्था रही होगी। स्वच्छता को नगर की योजना में स्थान देना उस समाज की उन्नत समझ का प्रमाण है।

चरण 2: सार्वजनिक निर्माण और विकसित आर्थिक जीवन विशाल स्नानागार की बनावट, उसमें पानी आने-जाने की व्यवस्था और जलरोधी निर्माण उनकी तकनीकी दक्षता दिखाते हैं। अन्न-भंडार, खेती के प्रमाण तथा विभिन्न शिल्पों के अवशेष बताते हैं कि लोगों का जीवन केवल भोजन जुटाने तक सीमित नहीं था। कृषि के साथ उत्पादन, संचय और विनिमय जैसी व्यवस्थाएँ भी विकसित थीं। विशाल सार्वजनिक निर्माण यह भी बताते हैं कि समाज मिलकर काम करने और संसाधनों का नियोजन करने में सक्षम था।

चरण 3: कला, सुरुचि और मानवीय संस्कृति वहाँ मिली नर्तकी की कांस्य प्रतिमा, पशु-अंकित मुहरें, आभूषण, मिट्टी के बर्तन और खिलौने कलात्मक रुचि तथा कुशल कारीगरी के उदाहरण हैं। ये वस्तुएँ सौंदर्यबोध के साथ सामान्य जनजीवन की विविधता भी दिखाती हैं। पाठ में भव्य राजप्रासादों और प्रभुत्व जताने वाले स्मारकों की अपेक्षा नगर की सुव्यवस्था और सांस्कृतिक समृद्धि अधिक उभरती है। लेखक इसी अर्थ में उसे 'लो-प्रोफाइल' संस्कृति के रूप में देखते हैं—ऐसी संस्कृति जिसका वैभव दिखावे से अधिक जीवन की गुणवत्ता में प्रकट होता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार नगर-नियोजन, स्वच्छ जल और निकासी की व्यवस्था, सार्वजनिक स्नानागार, आर्थिक संगठन तथा विकसित कला मिलकर सिद्ध करते हैं कि मुअनजो-दड़ो पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी। उसकी उपलब्धियाँ सामान्य मनुष्य के व्यवस्थित और सुरुचिपूर्ण जीवन में भी दिखाई देती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-नियोजन, स्नानागार और कला के ठोस उदाहरण दें तथा हर उदाहरण को सभ्यता के विकास से जोड़ें।

14(ख). ऐन फ्रैंक की डायरी में ऐसी क्या विशेषताएँ हैं कि वह पिछले 50 वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में एक है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी नात्सी उत्पीड़न के बीच छिपकर रहने वाली एक यहूदी किशोरी का आत्मीय जीवन-वृत्त है। इसमें इतिहास की त्रासदी और व्यक्ति का निजी संसार साथ उपस्थित हैं।
- इसकी लोकप्रियता का आधार अनुभवों की प्रामाणिकता, सहज अभिव्यक्ति, किशोर मन की सूक्ष्म पहचान और संकट में भी बची हुई मानवीय आशा है।

चरण 1: इतिहास का आत्मीय और प्रामाणिक साक्ष्य ऐन ने युद्ध और यहूदियों पर होने वाले अत्याचारों को केवल बाहरी घटनाओं की तरह नहीं लिखा। छिपकर रहने की विवशता, पकड़े जाने का भय, स्वतंत्रता का अभाव और सीमित साधनों में दिन बिताने की कठिनाइयाँ उसके अनुभवों में आती हैं। इसीलिए पाठक इतिहास के आँकड़ों से आगे बढ़कर उस समय के साधारण मनुष्यों की पीड़ा को अनुभव करता है। एक किशोरी की सच्ची आवाज बड़े ऐतिहासिक संकट को अत्यंत निकट और मार्मिक बना देती है।

चरण 2: किशोर मन की ईमानदार अभिव्यक्ति डायरी में ऐन की इच्छाएँ, अकेलापन, परिवार से मतभेद, स्नेह की आवश्यकता और अपने व्यक्तित्व को पहचानने का प्रयास दिखाई देता है। वह बड़ों के व्यवहार और अपने आसपास के संबंधों को ध्यान से देखती है तथा अपनी प्रतिक्रियाएँ खुलकर लिखती है। पाठ के प्रसंगों में स्त्रियों की स्थिति पर उसका विचार करना उसकी संवेदनशीलता और स्वतंत्र सोच को भी प्रकट करता है। वह केवल पीड़ित बच्ची नहीं, प्रश्न करने और अपना मत बनाने वाली सजग किशोरी के रूप में सामने आती है। इससे अलग-अलग समाजों के युवा पाठक भी उसके अनुभवों से जुड़ पाते हैं।

चरण 3: सहज शैली और सार्वभौम मानवीय संदेश आत्मीय संबोधन, घटनाओं का जीवंत विवरण और भावों की स्पष्टता डायरी को सहज पठनीय बनाते हैं। कठिन परिस्थितियों के बीच भी उसमें भविष्य के सपने, जीवन के प्रति लगाव और मनुष्यता की आशा बनी रहती है। भय और निराशा के साथ यह जिजीविषा पाठक को विशेष रूप से प्रभावित करती है। डायरी किसी एक देश या समुदाय की पीड़ा तक सीमित नहीं रह जाती; वह घृणा और भेदभाव के विरुद्ध संवेदना जगाती है तथा स्वतंत्रता, गरिमा और शांतिपूर्ण जीवन का मूल्य समझाती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक की डायरी ऐतिहासिक प्रामाणिकता, किशोर मन की निष्कपट अभिव्यक्ति और गहरे मानवीय सरोकारों का संगम है। उसकी सरल, आत्मीय शैली तथा संकट के बीच जीवित आशा ने उसे दुनिया भर के पाठकों के लिए स्मरणीय और व्यापक रूप से पठनीय बनाया है।

त्वरित सुझाव: लोकप्रियता के कारण बताते समय युद्ध का साक्ष्य, किशोर मन, सहज शैली और मानवीय आशा—इन चार पक्षों को जोड़ें।